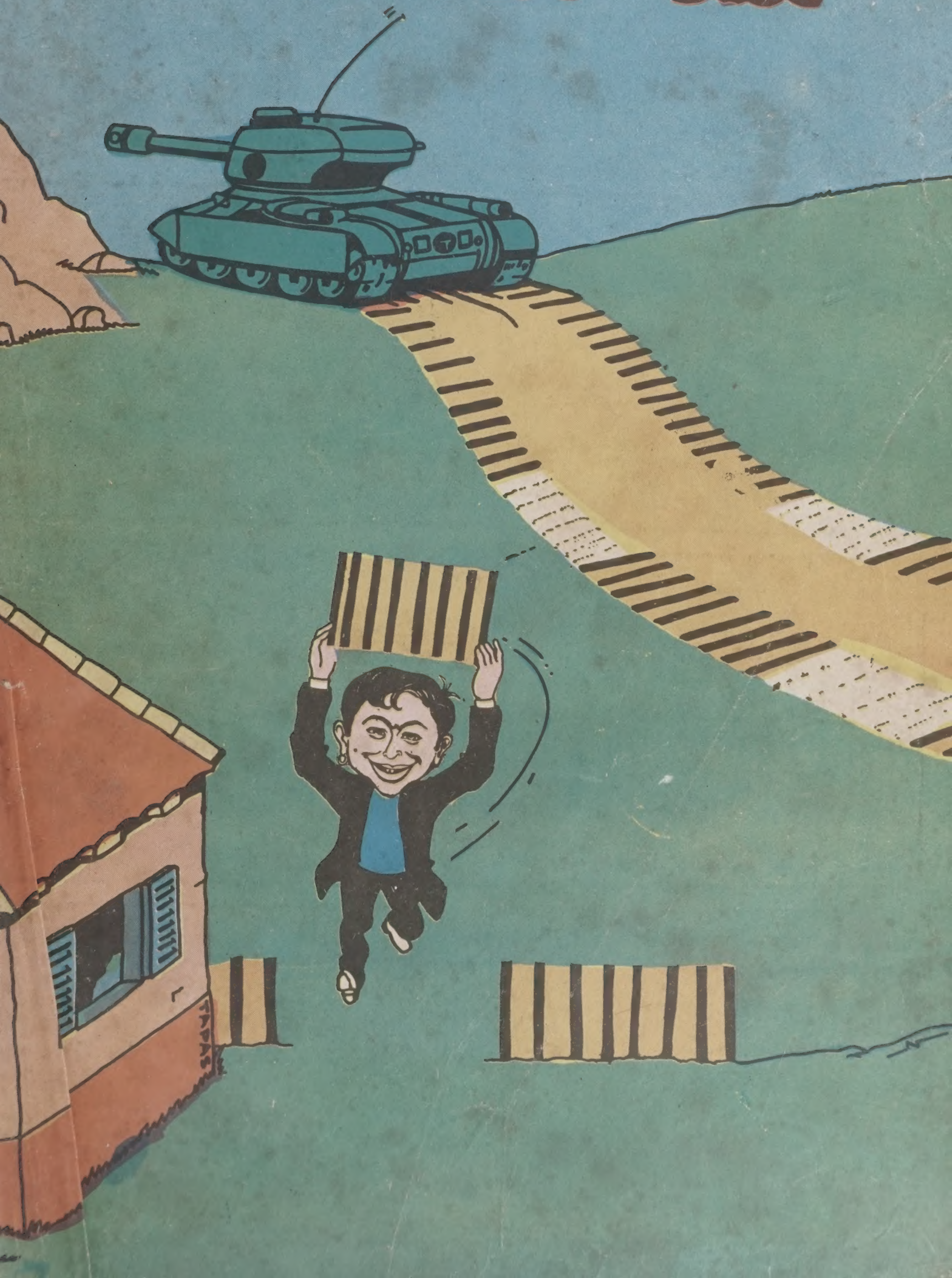
तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : ४ वर्ष : १५-२८ फरवरी १९८३

दीवाना




ओह, दो लड़कियों को बगल में दबाये यह कौन जा रहा है ? मसखरा है । पता नहीं क्या बात है, दरबार की सब लड़कियां इस मसखरे के पीछे लगी रहती हैं । रोज डेटिंग करता रहता है ।
मैं यहाँ का राजा हूं लेकिन किसी लड़की ने मुझे घास नहीं डाली । एक अदना सा मसखरा मेरा ही मुलाजिम, मुझसे बाजी मार रहा है और मेरी ही आंखों के सामने ।
चोबदार खरगोश सिंह, फौरन शाही जासूस तेजसिंह को अपने हुजूर में हाजिर करो ।
कहना टॉपसीक्रेट मिशन पर जाना है तुम्हें ।
जो आज्ञा महाराज ।
देखो किसी को तुम्हारे मिशन का पता न लगे । इसे फार आईज ओनली वाली फाइल में रखना । इस रहस्य का पता लगाओ कि दरबार की सभी सुन्दर लड़कियां शाही मसखरे को क्यों घास डालती है ? क्या देखती हैं वह उसमें ?
२४ घंटे में रिपोर्ट दे
महाराज मिशन सक्सेस फुल । लड़कियों को मजाकिया टाइप के आदमी पसन्द आते हैं । क्योंकि वह बोर नहीं करते । इसलिए मसखरे को सब चाहती हैं ।
सुनो सुनो जनाबे आला, क्या कहता है
आम जनता को खबर दी जाती है कि शाही
में कोई आदमी या दरबारी आज से चुटकुले
न ही कोई मजाक करेगा । जो इस हुक्म का
पकड़ा जाएगा उसे मौत की सजा दी जाएगी
केवल राजा साहब सुनायेंगे और सबको

83

व्यंग रचना

मास्टरी से उस्तादी

—शिव रैना

शैतानी दिमाग, बी. ए. की थर्ड क्लास डिग्री और 'रिश्वत की कमी' के कारण, हमारे कमजोर पांव कहीं नहीं जम रहे थे। दो वर्ष के भीतर, हमने दो दर्जन रोजगार कलेण्डर की तरह बदल डाले। एक सुबह मूंगफली का अंतिम दाना चूसते हुए, हम काम-दिलाऊ दफ्तर के भ्रांसामूलक इश्तेहार पढ़कर, गम गलत करने लगे। तभी हमने दो अदद बेकार नवयुवकों को बातें करते सुना। पहला कह रहा था: 'यह सारी बेकारी बढ़ती आबादी ने फैला रखी है! क्लर्की तक के लिए खून-खराबे हो रहे हैं! आबादी अमरीका की तरह सीमित होती तो सरकारी अफसर खुद घर-घर जाकर, राजपत्रित नौकरियां बांटते फिरते!

फाकाकशी द्वारा लगभग शहीद, दूसरे बेकार युवक ने एक सर्द आह भर कर कहा, 'आबादी तो यहां बरसाती मेंढ़कों की तरह, बढ़ती ही रहेगी! बहस छोड़ और एक काम कर! चल कहीं 'घटी दर पर' मास्टरी ही करते हैं। मैंने सुना है, मास्टरी यानि अध्यापन की लाईन में, आजकल मंदा है। 'टेप-रिकार्डर' या 'तोते' की तरह 'चपर-चपर कराने वाले इस अपमान-मूलक पेशे से, पढ़े-लिखे लोग अब बिदकने लगे हैं।'

हमने दाल-भात में मूसलचंद बनते हुए, आस्तीनें चढ़ाकर कहा, 'कौन बदत-मीज कहता है, कि मास्टरी अपमान-जनक पेशा है? हमारे परदादा, दादा और चाचा तक, लोकप्रिय मास्टर रहे हैं।' उन्हें आज तक दुनिया याद करती है। हालांकि हमें मालूम था कि हमारे दिवंगत परदादा, दादा और चचा को आज भी लोग लोकप्रिय नाम (क्रमशः) 'समोसा' 'आलूबुखारा' और 'पपीता' से याद करके, हंसी से पागल हो जाते हैं।

बेकार युवक ने तुरन्त क्षमा-प्रार्थना की, दरअसल फाकाकशी और बेकारी के आलम में मेरी जुबान गन्दी हुई है, भाई साहब। वर्ना मेरे पिता, स्वर्गीय जगदंबा प्रसाद, खुद हिसाब के अध्यापक रह चुके हैं।' 'जगदंबा प्रसाद' का नाम सुनते ही, हमें उस जल्लाद-चेहरा, क्रूर अध्यापक का ख्याल आ गया, जिसका नाम हमने 'हथौड़ा' रखा था—जो वर्ष में दो सौ दिन, हमें निकम्मेपन के कारण डेस्क पर खड़ा रखता था। साथ ही हमें वह स्कूल भी याद आ गया, जिसके प्रिंसिपल हमारे ससुर के एक वृद्ध मित्र नियुक्त हुए थे।

अतएव मूंगफली का चिरायु दाना निगलकर, हम तुरन्त प्रिंसिपल साहब की सेवा में उपस्थित हुए। हमने अपने हलवाई ससुर और अपनी सात अदद कन्याओं का वास्ता देकर, उनसे नौकरी मांगी। हमने दिवंगत ससुर के संस्मरण ऐसे नाटकीय ढंग से उन्हें सुनाए, कि प्रिंसिपल साहब ताजा विधवा की तरह फूट-फूट कर रोने लगे। नाक साफ करके बोले, 'बेटा गेंदा! फिलहाल मेरे पास मास्टरी की अस्थाई नौकरी तो मौजूद है। पर काम जरा सख्त है। फेल होने वाले, मैट्रिक के नव्वे छात्रों की एक सख्त क्लास तुम्हें संभालनी होगी। अगर ठीक-ठीक काम कर सको, तो आगे भी चान्स मिल सकता है।' उन्होंने हमें शक की निगाह से घूरा।

हमने प्रिंसिपल के चरणों में सिर रखकर गारंटी दी: 'मैं नाकारा विद्यार्थियों को मेघावी बनाने की गारंटी देता हूं, प्रिंसिपल साहब।'

'हनुमान चालीसा' पढ़ते हुए हमने नव्वे छात्रों की क्लास में पहले दिन पांव रखा, तो हमें लगा, हम कुम्भकर्णों, रावणों, कंसों, दुर्योधनों, फिल्मी 'प्राणों' 'प्रेम चौपड़ों' और 'शेटियों' के एक सदाबहार म्यूजियम में आ फंसे हों। अश्लील कार्टूनों, फब्तियों, सीटियों और 'हाथीबच्चे, वापस जाओ' के सांस-फोड़ नारों से, हमारा स्वागत किया गया। हमारे पांव पहले तो डगमगाए। दिल ने कहा: 'बच्चू, भाग जाओ। इन बदमाशों को संभालने-सुधारने के बजाय, लोकल सिनेमा घर में टिकटें ब्लैक करके, बच्चे पाल लो।' मगर हमें उन संकल्पों ने भारी बल प्रदान किया, जो हम गत रात मन में करते रहे थे।

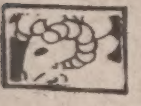
अतएव हमने सबसे पहले अपने 'होनहार' विद्यार्थियों के 'स्वागत' का लतीफों, गप्पों और अपनी शरारतों के संस्मरणों सहित, जवाब दिया। फिर हंस-हंसकर लोटपोट होते, उन लड़कों का परिचय प्राप्त किया। हमारे-जैसा हंसोड़ व हल्का-फुल्का टीचर पाकर, लड़कों के चेहरे खिल उठे। हमने धीमे स्वर में अपनी 'शिक्षा-नीति' स्पष्ट की: 'प्यारे भाईयों! आप मेरे छात्र नहीं, दोस्त हैं। मजे से क्लास में आएं और मजे से जाएं। कोई फिक्र या तनाव दिमाग पर न रखें। किसी को मत बताना, मगर सच्चाई यह, है, कि मैं एक 'जादुई तकनीक' से, आप लोगों के चेहरों पर से 'फेल होने' और 'शरारती' के गहरे दाग मिटाकर रख दूंगा।'

और हुआ भी यही। हमने पढ़ाने-लिखाने के बजाय, क्लास के बंद कमरे में, लड़कों को 'शरीफ बदमाश' बनने के गुर सिखाने शुरू कर दिए। नतीजा वह हुआ, कि हमारी बेपर की गप्पें सुनने के लिए, छात्र नियत समय से भी पूर्व ही स्कूल में आने लगे। उन्होंने नमकीन चेहरे बना लिए। प्रिंसिपल साहब हमारी 'सफलता' पर बधाई देने लगे। स्कूली शरारतें घटने लगीं।

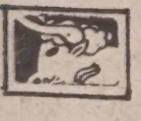
पहली त्रैमासिक परीक्षा हुई, तो हमने हर निकम्मे छात्र को, बिना पेपर पढ़े, नव्वे-नव्वे प्रतिशत अंक दे दिए। इस 'घपले' के, एकसाथ, अनेक फल निकले। हर छात्र ने 'मुफ्त के अंक' पाकर, अपना पेपर या तो छुपा लिया, या फाड़ डाला। हर छात्र मेघावी और गंभीर हो जाने का नाटक करने लगा। क्लास में एक असीम शांति व्याप्त हो गई। प्रिंसिपल साहब 'फेलशुदा क्लास' का 'रिकार्ड रिजल्ट' और बढ़िया व्यवहार देखकर, तुरन्त हमारी नौकरी पक्की करने दौड़ पड़े।

और लोहा गर्म देखकर, हमने गंभीरता पूर्वक प्रहार कर दिया—'गंभीर छात्रों को तन, मन से सुधारने—पढ़ाने में हम जुट गए।

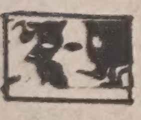
आपका भविष्य



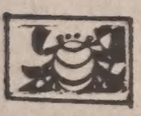
मेष : व्यर्थ की परेशानी और खर्च, यात्रा में कष्ट, अच्छे लोगों से मेल-जोल, खुशी और सफलता मिलेगी, हालात भी सुधरेंगे, लाभ कुछ देर से मिलेगा, कारोबार में उन्नति।



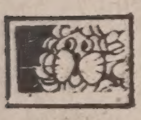
वृष : पराक्रम से सफलता मिलेगी, सेहत नरम, कारोबार ठीक चलेगा, आय में वृद्धि, शत्रुओं की हार होगी, फिर भी सावधान रहें और वाद-विवाद में न उलझें, व्यय बढ़ेगा।



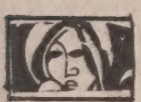
मिथुन : कोई बिगड़ा काम बनेगा, स्थाई कामधन्धों से लाभ होगा, घरेलू कामों में धन खर्च होगा, सज्जनों के परामर्श से लाभ, बेचैनी बिना कारण ही रहेगी, यात्रा लाभप्रद होगी।



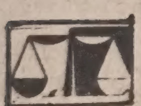
कर्क : बड़े लोगों से मेल मिलाप, शुभ फलों का संचार होगा, रोजगार सुधरेगा, स्वजनों से सहयोग मिलेगा, भाग्य साथ देगा और मेहनत का फल मिलेगा, विशेष कार्य बनेगा।



सिंह : परिश्रम का फल मिलेगा, कामधन्धों से लाभ होगा, कारोबार की हालत सुधरेगी, और लाभ में वृद्धि होगी, मुकदमें आदि में विजय. घरेलू कामों पर खर्च, यात्रा सावधानी से करें।



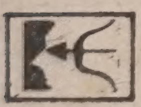
कन्या : आर्थिक तंगी, सज्जनों के परामर्श से काम बन जायेंगे, लाभ अच्छा मगर खर्चा भी साथ-साथ रहेगा, अफसरों से मेल जोल, मेहनत का फल मिलेगा, आर्थिक दशा सुधरेगी।



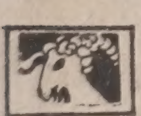
तुला : घरेलू कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, किन्तु सुस्ती या थकावट का प्रभाव रहेगा, कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, विरोधियों को ताकत परेशान करेगी, कोई विशेष समाचार मिलेगा।



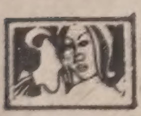
वृश्चिक : नातेदारों से मेल जोल, विशेष व्यय होगा, यात्रा में सुख, लाभ खर्च समान, धार्मिक कामों में रुचि, सेहत सुधरेगी, कारोबार बढ़ेगा, रुका धन मिलने को आशा है।



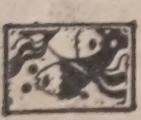
धनु : धन व्यय और लाभ भी होता रहेगा, घरेलू हालात ठीक चलेंगे, दौड़-धूप अधिक पर लाभ आशा से कम, कोई खास खबर मिलेगी, शत्रु हार मानेंगे, यात्रा सावधानी से करें।



मकर : घरेलू हालात से परेशानी, मित्र सहयोग देंगे, लाभ खर्च समान, घरेलू कामों में व्यस्तता रहेगी और कामकाज का बोझ भी बढ़ेगा, शत्रु अपनी हार मानेंगे, घरेलू व्यय कुछ अधिक होगा।



कुम्भ : कामकाज सामान्य, लाभ देर से मिलेगा, यात्रा छोड़ दें, इधर-उधर की बातों से परेशानी, राजकीय कामों में सफलता, विशेष परिश्रम करना पड़ेगा, व्यय की अधिकता रहेगी।



मीन : मिश्रित फल मिलेंगे, परिश्रम अधिक, लाभ कम होगा, कामधन्धों से लाभ बढ़ेगा, नई वस्तुओं की खरीद, नया काम न करें, शत्रु हार मानेंगे, अच्छे लोगों से मिलाप होगा।

आपके पत्र

'दीवाना' को मैं अभी तक बच्चों की ही पत्रिका समझता था। एक दिन यूं ही फुरसत में बैठा था कि बच्चों द्वारा लाई गई दीवाना-अंक 1 हाथ लगी, उसे ही उलटने पुलटने लगा। फिर ऐसा मन रमा कि पूरी पत्रिका पढ़ गया। तब यह अनुभूति हुई कि यह पत्रिका बच्चों की ही नहीं वरन् युवकों व बूढ़ों को भी समुचित मनोरंजन प्रदान करने में समर्थ है।

हास्य व्यंग फीचर दाढ़ी मुई गृह संपत्ति नाशी' तथा 'जूता सलामत रहे' बहुत ही सामयिक, संदर्भपूर्ण और मनोरंजक लगे। दोनों ही लेखों के लेखक श्री गोविन्द नारायण मिश्र को उनकी मंजी हुई व्यंग-शैली के लिए हमारी बधाई। "चरणपादुका सिंहासन पर विराजमान हों, तो देश में रामराज्य का आना स्वाभाविक है।"—चरणपादुका संस्कृति द्वारा रामराज्य की स्थापना, बड़ी ही मौलिक अनुभूति है।

एशियाई खेल और फैशन, बधाई कार्ड और हाकी फाइनल के फीचर भी अति मनोरंजक लगे।

अब मैं भी दीवाना का पाठक बन गया हूं और अगले अंक की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

बाल मुकन्द गुप्ता—इलाहाबाद

दीवाना अंक 2 प्राप्त हुआ। हमें इस बात की खुशी है कि अब आप दीवाना समय पर प्रकाशित करने लगे हैं। दीवाना के 'गणतंत्र दिवस विशेषांक' के सभी स्तम्भ रोचक लगे परन्तु व्यंग कहानियां 'किस्सा रंगीन टी. वी. का' और 'सरकारी चोर' बेहद पसंद आई। मोटू-पतलू और डेंगू ने तो हंसा-हंसा कर बुरा हाल कर दिया। 'क्यों और कैसे' ज्ञानवर्धक लगा तथा गरीब दास भी अत्यंत रोचक लगे। सिलबिल और पिलपिल मनोरंजक लगा। अगले अंक के इंतजार में……

तजेन्द्र भाटिया—दिल्ली

गणतंत्र दिवस विशेषांक दीवाना अंक पढ़ा। पढ़कर बहुत ही मजा आया। इस अंक में मोटू-पतलू गणतंत्र दिवस परेड का आंखों देखा देहाती हाल पढ़ कर पेट में मारे हंसी के बल पड़ गए और मदहोश, लल्लू ने भीं खूब हंसाया। इसमें हास्य कथा किस्सा रंगीन टी. वी. का' और 'नोटों का चक्कर' कहानियां बहुत ही ज्यादा पसन्द आई। इसके लिए लेखकों को बधाई और आशा है कि आगे भी आप इस तरह की कहानियां पढ़ने को मिलेंगी।

रघुबीर सिंह साही—नई दिल्ली-27

गणतंत्र दिवस विशेषांक मिला, मुख पृष्ठ बहुत ही अच्छा लगा, देखकर ऐसा लगा जैसे चिल्ली कालिया फिल्म में जेलर का रोल अदा कर रहा हो। अन्य सभी सामग्री रोचक थी और भारतीय क्रिकेट टीम का वेस्टइन्डीज के दौरे का प्रोग्राम खेल-खेल में जरूर दें और आशा करता हूं कि यह आप जरूर देंगे।

शिव कुमार गुप्ता—तलवाड़ा भील

मुख पृष्ठ पर

नर से बनी नारी
नारी से बना नर
यह तो सृष्टि ब्रह्मा की
तू भी तो कुछ कर।
सोचने से कुछ न होगा
क्यों बैठा है खाली
निशान टैंक के देख
उठा, लगा ले जाली॥

दीवाना

अंक : 4 वर्ष : 19 15-28 फरवरी 1983

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

ऐसे मिटी गरीबी मेरी

—पूरन सरमा

एक रात मुझे सपना आया कि मैं दीन-हीन हूं। मेरा जैसा अभागा दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। न मेरे पास बंगला है, न कोठी है, न कार है, न टी. वी. है न फ्रिज। बच्चे फटे हाल गली में घूम रहे हैं। शेष दुनिया पूरी तरह श्री सम्पन्न व धनाढ्य हो गई है। ऐशो-आराम से वक्त गुजार रही है। उनके बच्चे कीमती वस्त्र पहने कारों में घूम रहे हैं। कान्वेंट में पढ़ रहे हैं। मक्खन खा रहे हैं और उनके कुत्ते दूध पी रहे हैं। मुझे सपने में इस बात से बेहद पीड़ा हुई और मैं कराह उठा, तभी मेरी नींद खुल गई और सपना टूट गया। लेकिन पीड़ा बरकरार थी। जागने पर स्थितियों का जायजा लिया तो इसमें झूठ भी तनिक नहीं थी। सपना सच्चा ही आया था। सारे दिन मन दुखी उदास बना भौतिकतावादी सुखों को प्राप्त करने की तरकीबें सोचता रहा, लेकिन कोई ऐसी तरकीब सूझी नहीं जिससे मैं धनपति बन जाता और अपनी दरिद्रता का काला मुंह कर देता।

दूसरी रात फिर सपना आया। मैं धनाढ्य हो गया था। मैं सफेद कलफदार कुर्ते-पाजामें में लिपटा लोगों से घिरा हुआ था। आलीशान बंगले के एक कमरे में बैठा चमचों से बातें कर रहा था। किसी को लाईसेंस दिलवा रहा था-किसी को नियुक्ति, कोई तबादले की अर्जी लेकर आया था तो कोई परमिट चाहता था। मैं सबसे 'हां' कर रहा था। और बदले में सामने बैठे जीव थैलियां सौंप रहे थे। बाहर एक चमचमाती कार खड़ी थी जो मेरी प्रतिक्षा में ही खड़ी थी। मुझे एक आम सभा में भाषण देना था। गरीबी मिटाने की राह सुझानी थी। यह नुस्खा मुझे कण्ठस्थ था-क्योंकि मेरी स्वयं की गरीबी दूर हो गई थी इसलिए मैं चमत्कृत करने वाले व्यक्तित्व से दुनिया को मोह लेना चाहता था। मेरे बच्चे कीमती पोशाक पहने मुस्कुरा रहे थे। पत्नी आराम फरमा रही थी और नौकर-चाकर घर की व्यवस्थाओं को अंजाम दे रहे थे। मेरी काया अपेक्षाकृत भारी और आकर्षक हो गई थी। मैं इस कायाकल्प से स्वयं हैरान था। तभी मेरा पूर्व डुप्लीकेट रूप सामने आया और बोला—'जानते हो मैं कौन हूं।'

मैं पहचान गया, इसलिए बोला—'हां पहचान गया, तुम इस देश के गरीब हो'

'झूठ बोलते हुए तुम्हें शर्म तो नहीं आती।'

तो सुनो मैं तुम्हें कतई नहीं जानता। तुम इसी समय यहां से चले जाओ। नहीं गए तो धक्के देकर बाहर निकाल दिए जाओगे। मैं तुम्हें अब देखना भी नहीं चाहता।' मैं चीखा।

'लेकिन मैं तुम्हारी आत्मा हूं। मैं चला गया तो तुम जिंदा नहीं रह पाओगे'।

'अरे जाओ, मैंने आत्मा बदल ली है। अब इस शरीर में तुम्हारी जैसी आत्मा की जरूरत नहीं है'। इतना कहकर मैं खुलकर हंसा और फिर चिल्लाया-'अभी गए नहीं, जाओ तुम गरीब हो, जनता में मिल जाओ, तुमने मुझे कष्ट कम नहीं दिए हैं! जल्दी जाओ-मुझे जन सेवा जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य करने हैं।' जनता में जाकर मेरी जय-जयकार करो, गुणगान करो। गरीब आदमी का यही काम होता है। सुनो गरीबी भी तभी मिटेगी-जब तुम इसके लिए कुछ करोगे। गरीबी मिटाने के लिए गरीबों की आवश्यकता है।

उसने मेरा भाषण आराम से सुना और जेब से एक साफ-सुथरा आइना निकाला और मुझे दिखाया। मैं आइना देखते ही चिल्लाया-'तोड़ दो इस आइने को, 'पता नहीं वह आइना कैसा था-जिसमें मेरा पूर्व का कच्चा मकान, गन्दे मैले कीड़ों से बच्चे, बीमारी से पीड़ित मेरी पत्नी और झुर्रियों से भरा मेरा चेहरा सब कुछ दीन-हीन दीख रहा था। मैं व्याकुल हो गया, झटके के साथ मेरी नींद उचट गई। मैं फिर उसी हालत में लौट आया। एक सुन्दर सपने के टूट जाने का बेहद दुःख था।

दिन भर सपने पर विचार करता रहा। सपना बुरा तो नहीं था! आचरण किया जाये तो सब कुछ ठीक हो सकता है। लेकिन इतना बड़ा कायाकल्प होगा कैसे ?

तीसरी रात सोया तो फिर सपना। मैं स्वयं हैरान था कि आखिर इन तीन रातों से उसे सपने आ क्यों रहे हैं? अबकी बार सपने में मेरे सामने एक आदमी खड़ा था। गौर से देखा था। यह दूसरी रात वाले सपने का मेरा ही डुप्लीकेट था—बोला, 'कहो बेटे, हार गए न, तुम तो मुझे भगा रहे थे। सुनो गरीबी मिटाने के नुस्खे तुम्हारे पास नहीं मेरे पास हैं। उसकी सबसे पहली शर्त यह है कि तुम यह संकल्प लो कि आज से ईमानदारी, शिष्टाचार और नैतिकता का कतई परित्याग कर दोगे।'

'हां, मैं तैयार हूं। दरअसल में गरीबी से बहुत तंग आ गया हूं। मुझे इन्हे छोड़ने में कोई दिक्कत भी नहीं है। क्योंकि ताबे-जिन्दगी मुझे इससे कुछ हांसिल हुआ भी नहीं है।

'तो फिर कोई समस्या नहीं है। गरीबी मिटी समझो। बेईमानी करो, मक्कारी करो और जमकर झूठ बोलो। दुनिया को चकमा, धोखा देओ। दुर्जन लोगों के साथ रहो तथा सज्जनों की संगत छोड़ो। गुण्डागर्दी को गले लगाओ और सारी शिष्टताओं को त्याग दो। 'यह कहकर डुप्लीकेट चला गया। मेरी नींद टूट गई।

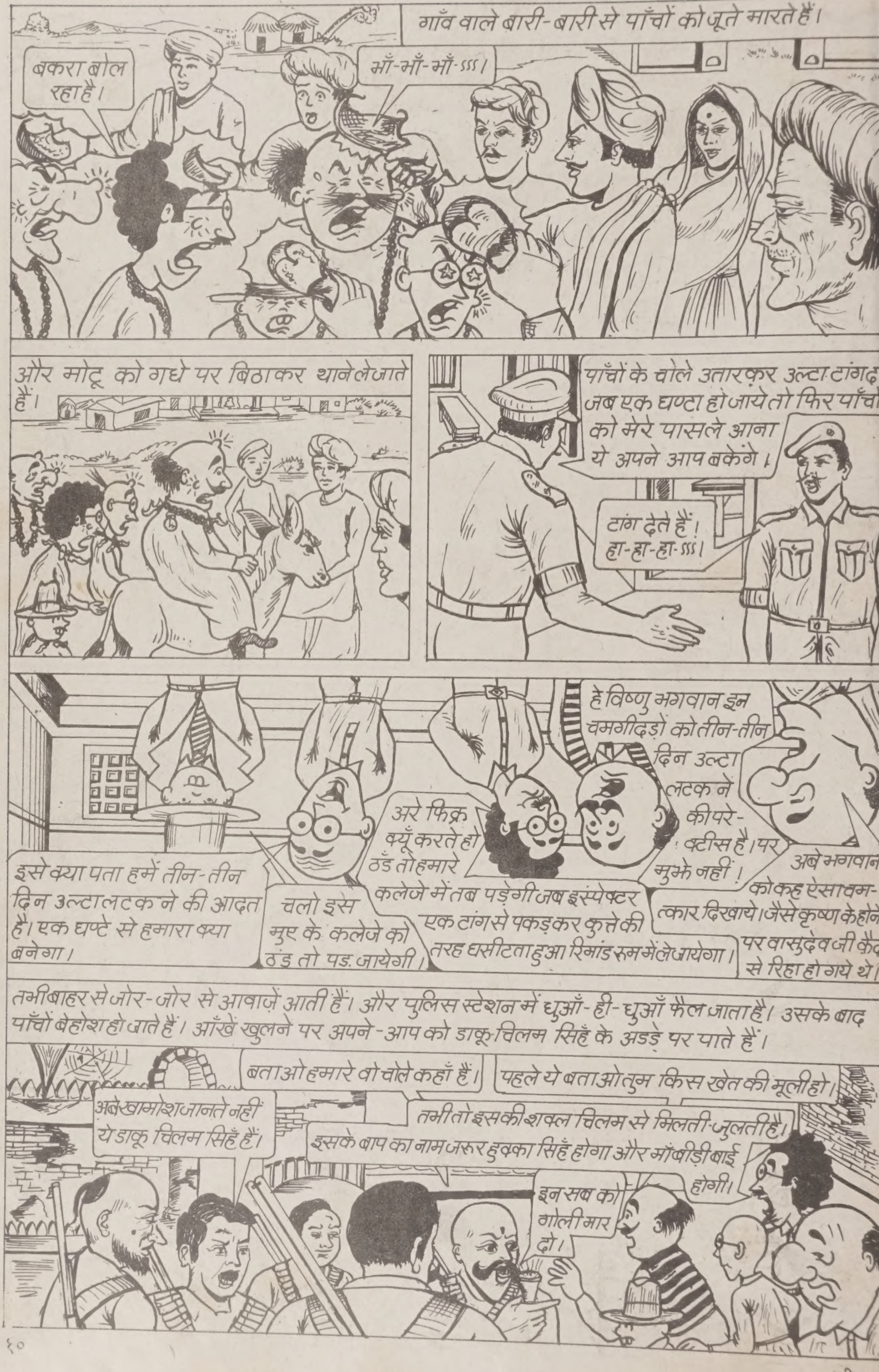
सपने पर विचार किया। उसे करने में कुछ भी कठिनाई न थी। सब कुछ अपने बलबूते पर बिना एप्रोज व दाम के होने वाला था। इस लिए यह आचरण करना सहज था। तीसरे सपने पर अमल शुरू हो गया। और पाँच-साल के भीतर तो परिणाम पूरी तरह फेवर में थे मैं दूसरे सपने को साकार होते देख रहा था। जिन्दगी का सच्चा मजा आ रहा था। देश की गरीबी मिटो या मत मिटो मेरी गरीबी मिट गई थी। कई बार अब भी वह मेरा डुप्लीकेट गरीब आता है तो मैं उसे खिला-पिलाकर चुप कर देता हूं, वह हंसता हुआ चला जाता है। ●


मोटू पतलू
हेराफेरी नहीं
कहानी एवं चित्रांकन: रघुबीर सिंह
आपने पिछले अंक में पढ़ा वो पाँचों हेराफेरी छोड़कर साधु बनकर एक गाँव के मंदिर में जाते हैं। तो गाँव वाले उनको मंदिर में परमानेंट रहने के लिये कहते हैं। क्योंकि मंदिर में भूत-प्रेतों का वास होता है। जो मनुष्यों को खाजाते हैं। अब इसके आगे पढ़िये।
नहीं बच्चा, हम प्रस्थान करेंगे। हम एक जगह नहीं ठहर सकते।
हाँ जमींदार साहब, हमें कुत्तों की तरह गली-गली घूमने की आदत है।
हाँ मोटू महाराज, यदि रुक गये तो हमें भूत खाजायेंगे और बचे खुचे शरीर को सुबह गाँव के कुत्ते चटखारे लेलेकर खायेंगे।
आप मोटू महाराज के चेले होकर इनको नहीं पहचान सके कि वह कितनी शक्तियों के मालिक हैं। भूत तो इनके कदमों में गिरकर अपने मोक्ष के लिए प्रार्थना करेंगे।
हाँ जमींदार साहब, हम मोक्ष को प्राप्त करके भूतों के चरणों में पड़े होंगे।
और कोई भूतनी हमें भून कर तड़का लगा रही होगी।
भूतों का डिनर अच्छा हो जायेगा।
मोटू महाराज आप अपने चेलों की आँखों से माया का पर्दा उठाकर इन्हें अपना असली रूप दिखायें ताकि ये आपको समझ सकें। आप इस गाँव के वीरान मंदिर को भूतों से मुक्त करके फिर से आबाद करें। और आप यहाँ अपना परमानेंट घर बना लें।



मोटू अपनी तारीफ सुनकर थोड़ा तड़ी में आकर कहता है -
हम गाँव के कल्याण के लिये जरूर रुकेंगे।
मोटू महाराज की जय।
अरे मैंने पहले एक बार मोटू महाराज को, एक जिन को वश में करके उसे जूते मारते देखा था।
अबे छछूंदर की औलाद तूने जिन को जूते मारते देखा होगा और मोटू पिट रहा होगा। क्यूँ झूठमूठ बोलकर हम पाँचों की जान के पीछे पड़ गया है।
हाँ पतलू तू ठीक कहता है। यह तो हमारे पीछे ऐसे पड़ गया है जैसे इतवार के पीछे शनि।
तो मोटू महाराज आप रात को रुकें। हम सुबह आपकी समाधि बनाने के लिये आ जायेंगे।
इतनी देर में वहाँ पुलिस आती है। पुलिस के साथ उनका जासूसी कुत्ता भी होता है जो मोटू और उसके साथियों को देखकर जोर-जोर से भौंकता है।
भौं-भौं
इंस्पेक्टर, मोटू, पतलू, घसीटा, झटके तथा चेले को पकड़ लेता है।
लगा दो इन पाँचों को हथकड़ी।
हमने क्या किया है?
तुम साधु के भेस में डाकू हो। तुम कई कत्ल करके भागे हुये हो। हमारा कुत्ता कपड़े सूंघता-सूंघता तुम्हारे पास पहुँचा है।


गाँव वाले हैरान रह जाते हैं।
ये पहले ही शक्ल से डाकू नजर आते थे।
तभी ये यहाँ से भागने की कोशिश कर रहे थे।
ये ढोंगी मशहूर डाकू निकले, राम-राम-राम।
इंस्पेक्टर साहब, यदि आप हुक्म दें तो हम इन्हें लाठियाँ मार-मार कर यहीं ढेर कर दें।
इंस्पेक्टर साहब हम हेरा फेरी बाज तो थे। पर वो भी हमने छोड़ दी है। हम सन्यासी हो गये हैं। परंतु हमने कभी किसी का कत्ल नहीं किया।
अरे बेटा घबराते क्यूँ हो। तुम रहोगे तो हेराफेरी करोगे। तुम पाँचों की गर्दन मैं डेढ़ फुट लम्बी करवा दूंगाँ।
हे विष्णु भगवान हमनें हेराफेरी छोड़ी तो हम डाकू बन गये। इस घनचक्कर इंस्पेक्टर को अक्ल दे।
इंस्पेक्टर साहब हम गाँव वाले इन पाँचों डाकुओं को जूते मारेंगे। और मोटू महाराज को जूते मार मार कर गधे पर बैठाकर पुलिस स्टेशन ले जायेंगे।
इनको सजा देना कानून का काम है।
और इधर गाँव के लोग मोटू और उसके साथियों को जूते व पत्थर मारते हैं।
मारो-मारो मोटू और उसके चेलों को...।
इंस्पेक्टर बेबस होकर चिल्लाता है।
रुक जाओ। हम मोटू को गधे पर बैठाकर ले जायेंगे। आप हल्ला-गुल्ला न करें और बारी-बारी से एक-एक आदमी इन सब को जूते मारता जाये।



गाँव वाले बारी-बारी से पाँचों को जूते मारते हैं।
बकरा बोल रहा है।
माँ-माँ-माँ-ऽऽऽ।
और मोटू को गधे पर बिठाकर थाने ले जाते हैं।
पाँचों के चोले उतारक़र उल्टा टांगदो जब एक घण्टा हो जाये तो फिर पाँचों को मेरे पास ले आना ये अपने आप बकेंगे।
टांग देते हैं! हा-हा-हा-ऽऽऽ।
इसे क्या पता हमें तीन-तीन दिन उल्टा लटकने की आदत है। एक घण्टे से हमारा क्या बनेगा।
चलो इस मुए के कलेजे को ठंड तो पड़ जायेगी।
अरे फिक्र क्यूँ करते हो ठंड तो हमारे कलेजे में तब पड़ेगी जब इंस्पेक्टर एक टांग से पकड़कर कुत्ते की तरह घसीटता हुआ रिमांड रूम में ले जायेगा।
हे विष्णु भगवान इन चमगीदड़ों को तीन-तीन दिन उल्टा लटकने की परेक्टीस है। पर मुझे नहीं!
अबे भगवान को कह ऐसा चमत्कार दिखाये। जैसे कृष्ण के होने पर वासुदेव जी कैद से रिहा हो गये थे।
तभी बाहर से जोर-जोर से आवाज़ें आती हैं। और पुलिस स्टेशन में धुआँ-ही-धुआँ फैल जाता है। उसके बाद पाँचों बेहोश हो जाते हैं। आँखें खुलने पर अपने-आप को डाकू चिलम सिंह के अड्डे पर पाते हैं।
बताओ हमारे वो चोले कहाँ हैं।
पहले ये बताओ तुम किस खेत की मूली हो।
अबे खामोश जानते नहीं ये डाकू चिलम सिंह हैं।
तभी तो इसकी शक्ल चिलम से मिलती-जुलती है।
इसके बाप का नाम जरूर हुक्का सिंह होगा और माँ बीड़ी बाई होगी।
इन सब को गोली मार दो।


पर अगर हम मर गये तो तुम्हारे चोलों में जो माल था वो कभी नहीं मिल पायेगा।
चलो हम तुम्हें गोली नही मारते। बताओ वो साधुओं वाले कपड़े कहाँ है? जो तुमने नदी के किनारे से उठाये थे।
भईया हमें माल- वाल से कुछ नहीं लेना। पहले हमें कुछ खिलाओ-पिलाओ हम तुम्हारे मेहमान हैं। मुर्गे वगैरह लाओ ताकि उन्हें खाकर हमें होश आ जाये।
हाँ, उसके बाद यदि हम न बताएं तो बेशक हम पाँचों का झटका कर देना।
ये बात है तो कसम खाओ खाने-पीने के बाद तुम मेरा माल बता दोगे।
हम तुम्हारी, तुम्हारे मां-बाप की, तुम्हारे खानदान की, तुम्हारी नानी की कसम खाकर कहते हैं कि हम माल बता देंगे।
चिलम सिंह गुस्से से चिल्ला उठता है-
मेरे खानदान की नहीं अपने खानदान की कस्में खाओ!
अरे भाई गुस्सा क्यूँ होते हो हम अपने खानदान की कस्में खा लेते हैं। हर तरह का माल खाने की तो हमें आदत हैं। चाहे माल अपना हो या बेगाना।


इन्हें गोली मार दो। इन्हें माल खाने की आदत है। ये हमारा भी माल खा जायेंगे।
हजूर ठहरिये। क्या एक हरामी दूसरे हरामी का माल खा सकता है।
तुमने हमारे सरदार को हरामी कहा हम तुम्हें गोली मार देंगे।
अबे ओ गोलीबाज की औलाद तुम्हें पता नहीं लाल ऐनक लगाने से सब कुछ लाल ही लाल दिखाई देता है। हम हरामियों को सभी हरामी नजर आते हैं।
चिलम सिहँ जी हम उस गलती की माफी माँगते हैं। भला आपका माल कौन खा सकता है। आपकी आँखों में तो जलाल है।
हाँ भईया, इनकी आँखें तो रात को उल्लू की तरह चमकती हैं। क्या बात है! इनके चेहरे से दहशत टपकती है। जैसे की कोई खूँखार चमगादड़ हो।
बस- बस हमारी और तारीफ मत करो। हम तुम्हारे खाने-पीने के साथ ज़ौहरा बाई के नाच का भी प्रबंध करेंगे।



चिलम सिहँ और सभी नाच देखते हैं।
पाँच सहेलियाँ खड़ी-खड़ी, दुखड़ा सुनायें घड़ी-घड़ी
एक सहेली का घरवाला था मोटू।
रात भर मुवा सोने ना देवे।
पराँठे पकवाये घड़ी-घड़ी।
वाह! वाह! ज़ौहरा बाई। मर जाऊँ चिलम सिहँ को गोली मार के।
पाँच सहेलियाँ खड़ी-खड़ी, दुखड़ा सुनायें घड़ी-घड़ी।
एक सहेली का घरवाला था पतलू।
रात भर मुवा सोने न देवे।
मसल दिखावे घड़ी-घड़ी।
हाय! मेरी जान! मर्दों की निशानी मसल होते हैं।
पाँच सहेलियाँ खड़ी-खड़ी, दुखड़ा सुनायें घड़ी-घड़ी।
एक सहेली का घरवाला था चश्मू।
रात भर मुवा सोने न देवे।
दीवाना दिखावे घड़ी-घड़ी।
मेरी जान! दीवाना पढ़ो तो दीवानी हो जाओ।
पाँच सहेलियाँ खड़ी-खड़ी, दुखड़ा सुनायें घड़ी-घड़ी।
एक सहेली का घरवाला था डाक्टर।
रात भर मुवा सोने न देवे।
इंजेक्शन लगावे घड़ी-घड़ी।
बलिये! इंजेक्शन से तो फ़ट का होता है।
पाँच सहेलियाँ खड़ी-खड़ी, दुखड़ा सुनायें घड़ी-घड़ी।
एक सहेली का घरवाला था ददलू।
रात भर मुवा सोने न देवे।
दाँत दिखावे घड़ी-घड़ी।
हाय। मैं मर जावाँ चिलम सिहँ की गर्दन काट के।
अरे हरामियों मेरा ही खाते हो और मुझे ही काट रहे हो। इन्हें गोली मार दो।
अबे मि॰ गोलीमार फिर पुरानी बात गोली मार दो- गोलीमार दो ssssss-।
गोली मार दी तो माल किससे लोगे।
तो बताओ माल कहाँ है?
Raghubir Singh


हजूर चिलम सिहँ जी। आप मेरे साथियों को रखलें। मेरी आँखों पर पट्टियाँ बाँधकर, एक आदमी के साथ मुझे शहर भेज दें। वहाँ से मैं पब्लिक बूथ से अपने दोस्त को फोन करूँगा। वो माल लेकर मुझे दे जायेगा।
डाकू चिलम सिहँ ऐसा ही करता है। और पतलू शहर पहुँचकर पब्लिक बूथ से पुलिस को फोन करता है।
हैलो इंस्पेक्टर साहब, मैं पतलू बोल रहा हूँ। जिनको आपने डाके के केस में गिरफ्तार किया था। इस वक्त हम डाकू चिलम सिहँ के कब्ज़े में हैं। मैं झिलमिल के पट्रौल-पंप के टेलीफोन बूथ से बोल रहा हूँ। आप फौरन अपनी फोर्स के साथ यहाँ आ जायें।
शाबाश! तुम वहीं खड़े रहो। हम अभी आ रहे हैं।
इंस्पेक्टर पतलू के साथ आये डाकू को पकड़ लेता है। और उसकी सहायता से डाकू चिलम सिहँ के अड्डे पर पहुँचकर डाकू चिलम सिहँ और उसके साथियों को गिरफ्तार कर लेता है।
आप पाँचों व्यक्ति महान हैं।
अब तो आप हमारी गर्दन डेढ़ फुट लम्बी नहीं करेंगे।
नहीं, जब तुमने हेरा फेरी छोड़ दी और कोई बुरा काम नहीं करते। बल्कि मैं तुम्हें डाकू चिलम सिहँ को पकड़ने का एक लाख का इनाम दिलाऊँगा।
समाप्त

पाकिस्तानी उर्दू हास्य व्यंग

मौसम कराची का



मूल : मुश्ताक अहमद यूसुफी

अंग्रेजों की बाबत मशहूर है कि वे कम बोलते हैं । मेरा ख्याल है, वे सिर्फ खाने और दांत उखड़वाने के लिए मुंह खोलते हैं । बल्कि यह कहना गलत न होगा कि अगर इंग्लिस्तान का मौसम इतना वाहियात न होता, तो अंग्रेज बोलना भी न सीखते और अंग्रेजी जबान में कोई गाली न होती । कामोबेश यही हाल कराची के अफसरों का है ।

मैं अपने शहर की बुराई करने मेंकोई बुराई महसूस नहीं करता । लेकिन मेरा ख्याल है, जो शख्स कभी अपने शहर की बुराई नही करता, वह या तो गैरमुल्की जासूस या म्युनिसिपैलिटी का वड़ा अफसर हो।यों भी मौसम, माशूक और हकूमत का उलाहना हमेशा से हमारा कौमी शौक रहा है । हर मिनट बदलते हुए मौसम से जिस दर्जा गहरी मुहब्बत हमें है, इसका अंदाजा यों लगाइये कि यहां बहुत से ज्योतिषी हाथ देखकर आगे आने वाले चौबीस घंटों के मौसम की भविष्वाणी करते हैं और खूब कमाते हैं ।

अब से कुछ महीने पहले तक कुछ सियासी लोग मौसम की खराबी के लिए मंत्रियों के दल-बदल या रद्दोबदल को जिम्मेदार ठहराते थे । उनका ख्याल था कि कराची का मौसम भी अंग्रेजों की ही एक चाल है, लेकिन लोगों को यकीन हो चला था कि दरअसल मंत्रियों के दल-बदल की वजह से ही यहां का मौसम खराब हो गया है ।

इंसाफ की नजर से देखा जाये तो मौसम खराबी का जिक्र करते रहना इखलाक कायम रखने का एक जरिया बन गया है । इसलिए कि अगर मौसम को बुरा-भला कहकर दिल की भड़ास निकालना शहरी शिष्टाचार में दाखिल न होता, तो लोग मजबूरन एक-दूसरे को गालियां देने लगते ।

इसमें शक नहीं कि रेडियो आवाज

हो या दमा, पसली का दर्द हो या पांव की मोच, हमें यहां हर चीज में मौसम की कार फरमाई नजर आती है। बलगमी मिजाज वाला सेठ हो या पागल कलाकार हर इंसान को अपनी खराबी मौसम की वजह से ही दिखाई देती है ।

कोई खराबी ऐसी नहीं जिसका जिम्मेदार आबोहवा को न ठहराया जाता हो । हालांकि ज्यादा तादाद ऐसे लोगों की है, जिनको सेहत की खराबी की वजह से मौसम खराब लगता है । एक साहब को जानता हूं, जिन्हें अरसे से बिनौले के सट्टे की सनक है । वह भी कराची की सीली आबोहवा ही को अपने तीन दिवालों का जिम्मेदार करार दे चुके हैं । एक और बुजुर्ग का दावा है कि वे अपनी बत्तीसी इसी नामाकूल आबोहवा की नजर कर चुके हैं । देखने में यह बात अजीब जरूर लगती है, मगर अपने तजुर्बे के मुताबिक दावे से कहता हूं कि ऐसी आबो हवा में चाय और सट्टे के बगैर तंदुरुस्ती कायम नहीं रह सकती ।

और तो और, चालान होने के बाद अक्सर पंसारी अपनी बेईमानी की सफाई में कहते हैं, हुजूर ! हम मौसम की खराबी की वजह से कम तौलते हैं । सीलन से अनाज और दालों का वजन दुगना हो जाता है । और जंग खाकर बाट आधे रह जाते हैं । नतीजे में ग्राहक को एक चौथाई सौदा मिलता है ! हम बिलकुल बेकसूर हैं ।'

एक कम खर्च औरत को मैं जानता हूं । इन्होंने पिछले सप्ताह अपनी 33वीं सालगिरह पर 23 मोमबत्तियां जलायी थीं । ये अक्सर कहती हैं कि दस साल पहले मैं घंटों आईने के सामने खड़ी रहती थी, लेकिन यहां की आबोहवा इतनी खराब है कि अब बेखबरी में आईने पर नजर पड़ जाती है, तो उसकी 'क्वालिटी' पर गहरा शक होने लगता है ।

मुझे तो गुस्सा उन मुसाहिबों पर

आना है, जो बिना सोचे-समझे यहां के मौसम पर नुक्ताचीनी तो करते हैं, मगर खुलासा नहीं करते कि उन्हें कौन-सा मौसम नापसंद हैं। यह तो आप जानते हैं। कि कराची में मौसम हर मिनट रुई के भाव की तरह बदलता रहता है। हमने तो यहां तक देखा है । कि एक ही इमारत के किरायेदार एक मंजिल से दूसरी मंजिल पर आबोहवा बदलने की गर्ज से आते हैं।

यहां आप दिसम्बर में मलमल का कुरता या जून में गर्म पतलून पहन कर निकल जायें, तो किसी को तरस नहीं आयेगा। कराची के अफसरान इस किस्म के मौसम के इस कदर कायल हो गये हैं कि अगर यह दो-तीन घंटे बदले नहीं, तो घबराहट होने लगती है और बड़ी-बूढ़ियां इसे कयामत के नजदीक पहुंचने की निशानी समझने लगती हैं।

होता यह है कि अच्छे-खासे लिहाफ ओढ़कर सोये और सुबह पंखा झलते हुए उठे। या महकमा मौसम के एलान को ख्याल में रखते हुए सुबह बरसाती लेकर घर से निकले और दोपहर तक लू लगने की वजह से उधर के उधर ही अस्पताल में दाखिल करा दिये गये। कहां रात को ऐसी उजली चांदनी खिली हुई थी कि चारपाई की चूलों के खटमल गिन लीजिये, और कहां सुबह दस बजे कुहरे का यह आलम कि हर बस बत्ती जलाये ओस से भीगी सड़क पर खरबूजे की फांक की तरह फिसल रही है।

कभी-कभी तो यह कुहरा इतना गहरा होता है कि नये मेहमानों को कराची का असली मौसम नजर ही नहीं आता। मौसम के बदलने की यह हालत है कि दिनभर के थके-हारे फेरीवाले शाम को घर लौटते हैं, तो यह फैसला नहीं कर पाते कि सुबह उठकर भूभल की भुनी गर्मागर्म मूंगफली बेचें या आईस्क्रीम।

मैं यह नहीं कहता कि आप सिर्फ मेरी सेहत देखकर यहां की आबोहवा को बुरा मान लें। लेकिन इतना अर्ज करूंगा कि चिड़िया घर में जो भी नया जानवर आता है, कुछ दिन यहां का प्यारा मौसम देखकर कार्पोरेशन को प्यारा हो जाता है और जो जानवर बच जाते हैं। उनका ताल्लुक उन जानवरों से है, जिनको कुदरती मौत मरते कम-से-कम मैंने तो कभी नहीं देखा जैसे मगरमच्छ, हाथी और कार्पोरेशन का कर्मचारी।

मैंने कराची के एक पुराने बाशिंदे से पूछा, यहां मानसून का मौसम कब आता है?' उस बूढ़े ने आसमान की ओर ताकते हुए जवाब दिया, चार साल पहले तो बुध को आया था।

यह कहना तो गलत होगा कि कराची में बारिश नहीं होती। अलबत्ता उसका कोई वक्त और पैमाना नहीं है, लेकिन जब होती है, तो इस अंदाज से, जैसे किसी मस्त हाथी को जुकाम हो गया हो। साल के ज्यादा हिस्से में बादलों से रेत बरसती है; लेकिन जब छटे-छमाहे दो-चार छींटे पड़ जाते हैं, तो मैदानों में बीर-बहूटियां और बहू-बेटियां एक दूसरे को देखने के लिए निकल पड़ती हैं। तब गली-कूचों में कंधे से कंधा छिलता है।

ये अंग्रेजी फिल्में, जिनमें बारिश के नजारे होते हैं, कराची में खूब कामयाब होती हैं। भूगोल पढ़ने वाले बच्चे उन्हें खुद देखते हैं और अपने माता-पिता को दिखाते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को बारिश का मतलब समझाने के लिए रावलपिंडी ले जाते हैं और उन्हें वे हरे-भरे 'लान' भी दिखाते हैं, जिन पर रुपया पानी की तरह बहाया जाता है।

जो पिता इस लायक नहीं होते, वे अपने बच्चों की ऊंगली पकड़कर क्लिफटन के किनारे पर ले जाते हैं और अपनी ऐनक रुमाल से साफ करते हुए उन्हें समझाते हैं कि देखो, सामने जो गाढ़ा-गाढ़ा धुंआ उठ रहा है और हमारी ऐनक को धुंधला कर रहा है यही वह पानी है, जो भाप बनकर उड़ जाता। देखते-ही-देखते यह ऊदे-ऊदे बादलों में जा मिलेगा। ये बादल समंदर से पानी भरकर हर साल पंजाब ले जाते हैं।

जो अब यहां से उट्ठेगा,
वह सारे जहां पर बरसेगा।
यह शहर हमेशा तरसा है,
यह शहर हमेशा तरसेगा।।

दो देहाती मौलवियों का किस्सा याद आ गया, जो पहली दफा 'हाक्स-बे' का जीता-जागता किनारा देखने गए थे। वहां उन्होंने देखा कि औरत काला बुर्का ओढ़े नहा रही है। उनसे जरा फासले पर एक सफेद रंग की लड़की धूप में नहायी हुई रेत पर बैठी अपना बदन सहला रही थी। मालूम होता था कि उसकी बिना बंद की पानी की अंगिया केवल इच्छा-शक्ति से टिकी हुई है। दोनों बुजुर्ग देर तक कुदरत का तमाशा देखते रहे। अचानक पहले मौलवी साहब जो उम्र में बड़े थे, घबराकर चीखे, हाजी इमामबख्श! खुदा के लिए निगाह नीची कर लो। मैं तो अन्धा हो गया हूं।

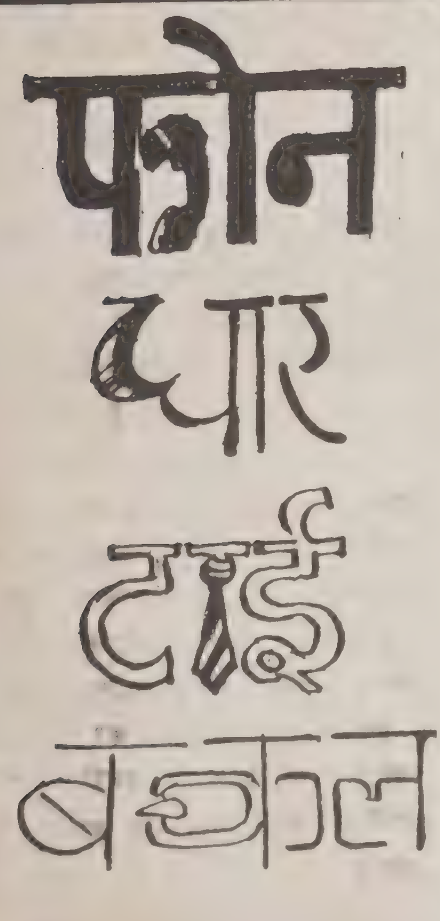
यहां आबोहवा में पानी और पानी में नमक की बहुतायत की वजह से मौसम हर वक्त सलोना रहता है। जाहिर है, ऐसे जलवायु में सौदागर और परदेशी के सिवा और कोई जिंदा नहीं रह सकता। हरियाली और फल-फुलवारी की सुन्दरता का इससे अन्दाजा कर लीजिये कि यहां हरियाली से मतलब सौ रुपए के नोट से है और तरबूज और गन्ने की गिनती फलों में होती है। यहां भले घरों में रेफ्रिजेटर में मिट्टी के फल रखे देखे गए हैं। यों कहने को यहां चार-पांच नदियां जरूर हैं, जो कराची के नक्शे पर साल भर बहती रहती हैं। ये कराची के लिए बड़ी नियामत हैं, क्योंकि इनके पेट से पी. डब्ल्यू. डी. के ठेकेदार साल भर बजरी निकालते रहते हैं।

यहां हर मकान जोगी या फकीर होता है। वजह इसकी यह है कि पश्चिम से तेज हवाएं चलती हैं, जो खाक बरसाती रहती हैं। मुंह पर जरा हाथ फेरिये, तो महसूस होता है, गोया अभी अभी पानी न मिलने पर मिट्टी मुंह पर लगायी है। एक बड़े जानकार आदमी से मालूम हुआ है कि बजरी के ठेकेदार रात को अपनी खाली ट्रक दरिया-ए-मलेर के हवा के रुख पर खड़ी कर देते हैं, सुबह तक वह खुद-ब-खुद बजरी से भर जाती है। खाली करने का तरीका भी यही है।

शेष पृष्ठ २२ पर



बोलते अक्षर



दीवाना के वार्षिक सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
२७ रुपये	१४ रुपये	१ रुपये ५० पैसे

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ३६ रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

नीचे दिये कूपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये। चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से ही भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजिये

सरकुलेशन मैनेजर, दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम———— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.————————से भेज रहा हूं।

नाम————————————————

पता————————————————

——————————शहर/जिला——————————

राज्य ——————————पिन कोड——————————

दैनिक जीवन की गेंदबाजी और उन गेंदों को खेलने के दीवाने टैकनीक

हमारा दैनिक जीवन एक क्रिकेट मैच है आप
बैटिंग करते होते या बालिंग या फील्डिंग। ऐसे में
क्रिकेट के तकनीकों की जानकारी जरूरी है।

इन स्विंगर



साली आपसे पिक्चर की फर्माइश करे तो समझें कि टर्निंग पिचपर वह इन स्विंग करती स्पिन गेंद फेंक रही है ऐसी गेंद को स्वीप करने की कोशिश न करें। कैच आउट होने का खतरा है। बाल की स्पिन को मारते हुये बॉलर की तरफ बिना रन बनाये हल्के बैट से लुढ़का दें यानि फर्माइश मान लें।

गुगली



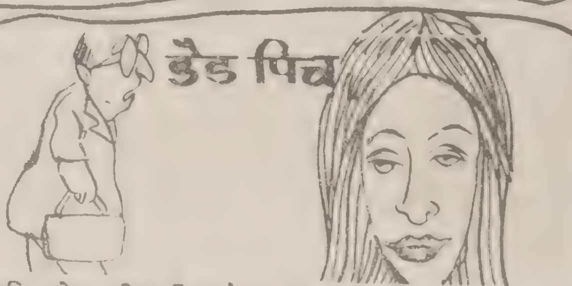
यदि नौकर तनख्वाह में बढ़ोत्तरी की मांग कर रहा है तो समझिये कि वह गुगली फेंक रहा है। ऐसी गेंद को बिना रन बनाये डिफैन्सिव बैट से खेलिये। यानि साफ जवाब मत दें। देखेंगे। या अगले महीने सोचेंगे कह कर टाल दें।

लूज बॉल



बेटा अगर इस बहाने कि उसने होमवर्क नहीं किया है टीचर मारेगा स्कूल न जाना चाहे तो समझिये उसने फुल टॉस आपको दिया है। ऐसी बॉल को खूब सजा मिलनी चाहिये। सीधा ऐसा धक्का मारिये कि बॉल स्कूल की छत पर जा गिरे यानि साहब जादे को कान पकड़ कर स्कूल के रास्ते पर रवाना करें।

डैड पिच



यदि दहेज की अधिक मांग के कारण आपकी शादी तय नहीं हो पा रही है तो समझिये कि पिच डैड है, न फॉस्ट बॉलिंग काम कर रही है न स्पिन। वैट्स मैन कोई आऊट नहीं हो रहा है। ठंड (पैसों के बिना कड़की) के कारण बॉलर से ठीक तरह नहीं पकड़ी जा रही है। ऐसे में खूब फुलटॉस फैंक कर बैट्समैन को स्टम्प आऊट करना ही एकमात्र रास्ता है। यानि आप स्वयं किसी लड़के को अपने जाल में फंसा विवाह रजिस्ट्रार के दफ्तर में उसे स्टम्प आऊट करें।

व्यंग

घरेलू नौकर

मूल : शौकत थानवी

वह समय बहुत ही शीघ्र आएगा, जब लोगों को घरेलू नौकर न मिल सकेंगे और बड़ों-बड़ों को घरेलू काम खुद करने होंगे। पहले तो घरेलू काम करने के लिए नौकर मिलते ही नहीं और अगर चिराग लेकर ढूंढ़ने वाले को संयोग से कोई नौकर मिल भी जाता है तो तनख्वाह इतनी मांगता है कि जी चाहता है कि खुद ही उसी की नौकरी कर ली जाए। तनख्वाह के अलावा उसकी शर्तें ऐसी होती हैं कि वह कहे और सुना करे कोई।

अभी पिछले दिनों इस नाचीज के घरेलू नौकर ने अपनी नौकरी करना अपनी शान के खिलाफ समझकर उसने अपने वालिद के इंतकाल की तीसरी खबर सुनाकर छुट्टी लेनी चाही! अब भला उनसे कौन पूछता कि गरीब परवर, आपके अब्बाजान शायद किश्तवार इंतकाल फरमा रहे हैं, इसलिए कि इसी सिलसिले में आप पहले भी दो बार छुट्टी ले चुके हैं। पर हो सकता था कि वह इसका यह जवाब देते कि किसी के बाप का क्या इजारा, हमारा बाप है, हम उसको जितनी बार चाहें मारें। आखिर उन्हें छुट्टी दे दी गई। पिछले दो बार वह चार दिन की छुट्टी लेकर आठ दिन बाद आए थे। इस बार तो दो हफ्ते बाद भी नहीं आए। हो सकता है अपने अब्बाजान के बजाए खुद उनको यह सफर करना पड़ गया हो। बहरहाल



उनकी जगह के लिए एक औरत की जरूरत पेश आ गई और इस सिलसिले में दौड़-धूप की। कई सिफारिशों के बाद जो चंद उम्मीदवार मिले, बल्कि जिन चंद का हम को उम्मीदवार बनना पड़ा, हमारा दिल ही जानता है कि उन्होंने कैसे-कैसे होश उड़ाए हैं और हमें उनसे किस-किस तरह जान बख्शवानी पड़ी है।

सबसे पहले एक सच्चे दोस्त ने जिन बुजुर्ग को भेजा वह अनेक रोगों से पीड़ित थे और इस कशमकश में पड़े थे कि उनमें से किसी रोग को अपने लिए मौत का बहाना बनायें! उस बुजुर्ग ने आते ही फरमाया कि नौकरी तो मैं करना चाहता हूं, मगर सेहत का जो हाल है वह आप देख ही रहे हैं। इस लिए, सबसे पहले तो मेरा इलाज कराइये और फिर मेरी तीमारदारी कीजिए। अगर आपकी किस्मत से जीता रह गया तो तन्दुरुस्त होने के बाद आपकी खिदमत कर सकूंगा......यह कहते-कहते उनको ऐसा जोरदार दौरा पड़ा कि हमको सचमुच उनकी तीमारदारी करनी पड़ी। उनके लिए बिस्तर लगाया, उनको लिटाया, ताकि वह दौरा खत्म हो तो उनसे माफी मांगें। मगर यह भी खटका था कि इससे पहले वह खुद ही खत्म न हो जाएं और उनके कफन-दफन की जिम्मेदारियां हमें कुबूल करनी पड़ें। मगर शुक्र है कि सिर्फ एक रात हमसे अपनी खिदमत लेकर वह सुबह इस काबिल हो गए कि हम उनसे माफी मांग लें और उन पर वह फर्क जाहिर कर दें, जो कब्रिस्तान और गरीबखाने में है।

शेष पृष्ठ घ पर

मदहोश



लम्बी नाक के दीवाने प्रयोग

जी हां, लम्बी नाक मामूली चीज नहीं है. इसके कई लाभ हैं। लम्बी नाक अपने मालिक की कई प्रकार से सहायता करती है। कई काम आ सकती है। जरा इस फीचर को पढ़ कर देखिये!




कभी नाक से जमीन पर लकीरें खेंचने को नौबत आये तो गर्दन को ज्यादा नीचे नहीं झुकाना पड़ेगा।
दोनों हाथ सामान के कारण बंधे हों तो भी बस में सफर करने में दिक्कत नहीं होगी। नाक सब संभाल लेगा।
लम्बी नाक दूसरों को पास नहीं आने देगी। यह तो आप जानते ही हैं कि आजकल जमाना ऐसा है कि किसी को मुंह नहीं लगाना चाहिये।
बेकारी के दिनों में बैलेन्सिंग एक्ट दिखा कर रोटी पानी के पैसे कमाये जा सकते हैं।
लम्बी नाक वाले को जल्दी-जल्दी जुकाम पकड़ लेता है। और दफ्तर से छुट्टी मारने का बहाना मिल जाता है।
तंग न करें।
नाक से सूचना की तख्ती लटकायी जा सकती है।
जानवरों से जल्दी ही दोस्ती हो जाती है। लम्बी नाक वाले को जानवर अपना ही आदमी समझते हैं।

दूसरे साहब— जिनके सामने हमको इंटरव्यू देना पड़ा, जरा अंगरेज किस्म के आदमी थे । यानि न सिर्फ कोट-पतलून में थे बल्कि बोलते भी अंग्रेजी ही थे और उनका ख्याल था कि हम उनको इसलिए नौकर रखना चाहते हैं कि वह हमको अंग्रेजी जवान पका-पका कर खिलाया करें । उनसे लाख कहा, जनाबे वाला, हम ठेठ पाकिस्तानी हैं, और वह भी दाल-गोस्तवाले, मगर वह सूप, कटलेटस्, चाप्स और करी से ही बराबर धमकाते रहे । छोटी, बड़ी पंजली हाजिरी की ही बातें करते रहे और फिर जो पतलून की जेब में हाथ डालकर अपने ही शब्दों में 'किचन' के मुआयने को गए तो हम कुछ इस तरह घबराए हुए थे, जैसे कोई मातहत दफ्तर के मुआयने के लिए तैयार न हो और साहब अचानक दौरे पर आ जाएं ! चुनांचे जो खटका था, वही हुआ । बावर्चीखाने के मुआयने के बाद वह मुंह बनाए हुए तशरीफ लाए । एक हिकारत भरी नजर हम पर डाली और निहायत ही बेजारी के साथ फरमाया," नहीं साहब, हम यहां नहीं रह सकते । बड़ा थर्ड क्लास 'किचन' है । बैठकर खाना पकाने का चूल्हा है और हम खड़े होकर पकाने के आदी हैं । यह चूल्हा तो फूंकना पड़ेगा । न आपके यहां कुकर नजर आते हैं, न बिजली का स्टोव दिखाई देता है । हम इस देशी कारखाने में काम नहीं कर सकते ।" यह कहकर वह शायद इंग्लैण्ड रवाना हो गए । जान बची और लाखों पाए, वरना वह तो इस घर को इंग्लैण्ड बना कर रख देते ।

एक रिश्तेदार साहब ने हमारे हाल पर तरस खाकर एक नौकरानी भेज दी थी । यह श्रीमती जी 'फैमिली प्लैनिंग' की घोर विरोधी थीं और अपने साथ ही हर साइज और हर डिजाइन के अनेक बच्चे लाई थीं, घर में आते ही हर ओर बिखर गए । वे ड्राइंग-रूम में घुसकर सोफों पर उछलने लगे । एक ने रेडियो की मरम्मत शुरु कर दी । एक साहबजादी लिखने की मेज से शीशे का पेपरवेट उठा लाई और उसको लुढ़काने में व्यस्त हो गई और सबसे छोटे बरखुरदार अपनी अम्मी जान की गोद से रेंग कर घुटनों के बल चलते हुए ड्रेसिंग टेबल तक पहुंचे और शायद मेकअप करने के इरादे से शीशा पकड़कर खड़े हो गए । उन श्रीमती जी ने इस नाचीज की बीवी को बताया कि वह इस घर को अपना घर समझ कर रहने के इरादे से आई हैं ।

वह ऐसा क्वार्टर चाहती हैं जिसमें वह अपने इस खानदान को लेकर रह सकें । चालीस रुपया माहवार और खाना लेंगी और खाना शायद इस पूरी पलटन का लेंगी । खुद उन बेगम साहिबा ने तो नहीं कहा । मगर काम का तरीका शायद यही होगा कि हम लोग उनके बच्चों को खिलाते रहेंगे और वह काम करती रहेंगी । होना तो यह चाहिए था कि उनको इतने ज्यादा बच्चों वाली होने के कारण इस नौकरी के काबिल न समझा जाता । मगर बीवी साहिबा ने यह कहकर उनको विदा कर दी और सब तो ठीक है, मगर बुआ, ये जो तुम्हारी कंघी चोटी और सुरमा-मिस्सी के नखरे हैं ये इस घर में न चलेंगे ।

एक दिन एक ऐसे फरिश्ता-सूरत बुजुर्ग आ गए कि उनको निहायत इज्जत से बैठाना पड़ा । बाद में मालूम हुआ कि वे भी नौकरी के उम्मीदवार हैं । हर काम करने को तैयार, हर तनख्वाह कबूल करने को आमदा । बहुत ही माकूल और हर तरह का भरोसा करने के लायक । शर्त सिर्फ एक थी, "खाना आपके साथ ही दस्तरखान पर खाऊंगा ।

मैंने अर्ज किया, "खाना तो मैं बेगम के साथ खाया करता हूं ।"

जवाब में वे फरमाने लगे, "मुझे इस पर कोई ऐतराज नहीं कि वह भी बैठ जाया करें ।"

अब बताइये, उनसे क्या कहते । मजबूरन यही बहाना करना पड़ा कि शाम को एक और आदमी आने का वादा कर गया है; अगर वह न आए तो आप तशरीफ ले आइयेगा ।

अनुवाद : तरनजीत

बन्द करो बकवास



सब्स्टीच्यूट फील्डर



यदि बीवी कहे कि उसकी तबियत ठीक नहीं रहती, वह अपनी मां को बुलाना चाहती है तो समझिये कि फील्डर रिटायर्ड हर्ट यानि अस्वस्थता के कारण पैविलियन लौटना चाहती है और अपनी जगह सब्स्टीच्यूट फील्डर लगाना चाहती है। आप इसमें टांग न अड़ायें। क्योंकि नियमों में सब्स्टीच्यूट फील्डर की व्यवस्था है। हाँ, वह क्लोज इन फील्डिंग नहीं कर सकती यानि आपसे तनख्वाह का हिसाब नहीं मांग सकती।

यार्कर



यदि बाप दहेज के लालच में आपकी शादी मोटी लड़की से करवाना चाहता है तो समझिये कि डंकी ड्राप गेंद फेंक रहा है। यदि आपने इस गेंद को नहीं मारा तो सीधे विकेटों पर जा गिरेगी और आपके अरमानों के इंनिंग्ज की समाप्ति हो जायेगी।

मिस फील्डिंग



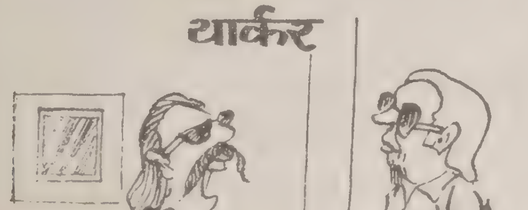
यदि अखबार वाला गलती से पड़ौसी का अखबार आपके आंगन में फेंक जाये तो समझिये कि फील्डर ने ओवर थ्रो कर मिस फील्डिंग की है। इस पर खूब रन बनाइये अर्थात् अखबार को चाट जाइये। खबरों का आनन्द लीजिए, यह आपकी गलती नहीं है।

एल बी डब्ल्यू



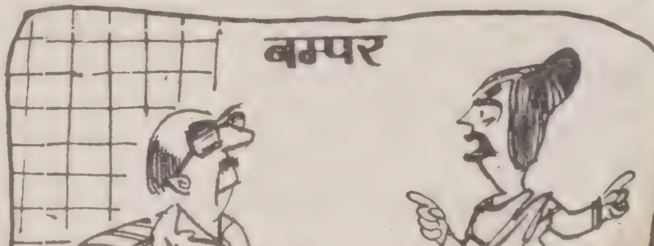
यदि प्रेमिका का भाई आपको बहन के साथ रेस्टोरेन्ट में देख ले तो समझिये आप एल. बी. डब्ल्यू (लैग बिफोर वेटर) हो गए हैं, कोई शक नहीं है। आप क्रीज छोड़कर सीधे पैविलियन यानि अपने घर जाइये। आप दोनों के रोमांस की साझेदारी का निश्चित ही अंत हो गया है।

यार्कर



लड़का अगर कहे कि प्रेम विवाह करने जा रहा है तो समझिये कि वह आपको यार्क करने की कोशिश कर रहा है ऐसी गेंद को बल्ले के नीचे से खोद कर निकालिये वर्ना सीधे क्लीन बोल्ड कर देगी। यानि भावी समधी की हजामत यानि क्लीन शेव करने की जो योजना आप बनाते रहे हैं उसकी छुट्टी हो जायेगी।

बम्पर



बीबी मायके जाने की धमकी देती है तो समझिये कि वह बम्पर फेंक रही है। बम्पर को सावधानी से खेलना चाहिये। बाल ज्यादा ऊंची उठ रही है तो डक कीजिये। बेकार बल्ला हुक करने के लालच में घुमायें तो आप आऊट हो सकते हैं, चोट लग सकती है। बीबी इस समय गुस्से में है वह बेलन का उपयोग करे तो आपकी वही हालत हो सकती है जो मोहिन्दर अमरनाथ की में हुयी थी।

क्यों और कैसे

प्र०: इलैक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन कैसे कार्य करती है ?

उ० इलैक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन एक ऐसा यंत्र है जिससे हम अपने शासकों का चुनाव करते हैं। भारत में सबसे पहली बार ऐसी मशीन का तजुरबे के तौर पर असेम्बली के चुनाव में 19 मई को प्रयोग किया गया था।

यह मशीन माईकरो प्रोसेसर टेक्नोलोजी पर आधारित है और इसका इस्तेमाल बहुत ही आसान है। इसमें दो यूनिट होते हैं—कन्ट्रोलिंग युनिट जो प्रोसाईडिंग अफसर या किसी ऊंचे अफसर के पास होगा और बैलेटिंग युनिट जो पोलिंग बूथ में होगा जहां मतदाता पूर्ण गुप्तरूप से अपना मत देंगे।

चुनाव में खड़े होने वालों के नाम तथा चिन्ह बैलेटिंग युनिट पर होंगे—हर नाम के सामने एक बटन और लाईट लगी होगी। वोटर अपनी पसंद के कैंडीडेट के सामने के बटन को दबाकर अपना वोट देंगे। वोटर को वोट के रिकार्ड हो जाने का पता कैंडीडेट के नाम के सामने वाली लाईट के जलने से चलेगा। साथ-साथ एक बीप की ध्वनि से कन्ट्रोल युनिट सावधान हो जाता है। कन्ट्रोल युनिट और बैलेटिंग युनिट एक दूसरे से इस तरह मिले हैं कि वोटर एक बार से अधिक बटन नहीं दबा सकता।

कन्ट्रोल युनिट में प्रोसाईडिंग अफसर की सुविधा के लिए एक रजिस्टर भी है जिसमें दी गई वोटों का जोड़ आता रहता है।

इस वोटिंग मशीन की सहायता से वोटिंग का परिणाम भी उसी दिन बताया जा सकता है।

प्र०: मोती और मूंगे कैसे बनते हैं ? मोती बनाने के रहस्य का सबसे पहले किसे पता लगा था ?

उ०: मोती मोलस्को से प्राप्त होते हैं जिनमें स्कविड, क्लैम और सीपी शामिल हैं। मोलस्क के खोल या शैल के भीतर एक बाहरी त्वचा होती है। जब कोई मिट्टी का कण या कोई बहुत छोटा पानी का जीव उसकी इस त्वचा पर चिपक जाता है तो उसके चारों ओर एक कठोर तत्व उत्पन्न हो जाता है। इसी से मोती बनता है। यह तत्व उसी चीज का बना होता है जिसका मोलस्क का शैल होता है—सीप या मोती—की मां।

मोती बहुत से रंगों और आकारों में पाये जाते हैं। सबसे कीमती मोती बिलकुल गोल, चिकने और सफेद होते हैं। परन्तु एक प्रकार का काला मोती भी जो मेक्सिको की खाड़ी से प्राप्त होता है बहुत मूल्यवान होता है।

संसार में सबसे पहले चीनियों को पता चला था कि मोती का उत्पादन कैसे होता है और इसका विकास क्यों कर किया जा सकता है उन्होंने मोलस्क को एक कम गहरे तालाब में डाल उसके खोल में मिट्टी का कण डाल दिया और फिर मोती के बनने की प्रतीक्षा की।

दो तीन महीने के बाद वे सीप से मोती अलग कर मोलस्क को खा जाते थे।

कठोर और सूखे मूंगे जो दुकानों और म्यूजियमों में दिखाई देते हैं, नन्हें जीवों के कंकाल हैं जो कभी एक के साथ एक जुड़े बड़ी-बड़ी कालोनी के रूप में समुद्र में रहते थे। मूंगे के जीव या पोलाईप का व्यास लगभग 1/15 इंच होता है। यह आदिकाल के ऐनीमोन के तरह का उसका ही रिश्तेदार पौधे जैसा जीव होता है। परन्तु ऐनीमोन के विपरीत पोलाईप का स्केलेटन या ढांचा कठोर होता है और एक बार यह अपना घर बना लेने के बाद वहां से हिल नहीं सकता।

हर एक पोलाईप एक छोटी सी नली जैसा होता है जिसका एक सिरे का मुंह बन्द होता और दूसरी ओर उसके डंक जैसे टेनटेक्लस निकले रहते हैं। डंक से यह अपना भोजन नन्हें समुद्री जीव पकड़ता है। पोलाईपस में कलियां सी निकलती हैं जिनसे इनका विकास होता है। एक वड़ या कली सी पोलाईपस के शरीर पर उभरती है और कुछ समय बाद अपने मातृ पोलाईपस जितनी बड़ी हो जाती है तब तक इसके भी डंक औ[र] टेनटेलस निकल आते हैं। पोलाईपस ब[ड़ी] कालोनी में रहते हैं। यह मूंगे के जी[व] गरम समुद्रों में उथले पानी में रहते हैं[।] मूंगों की यह कालोनी इतन[ी] बड़ी हो जाती है कि वे जहाजों के लि[ए] भी खतरा बन जाती हैं।

परन्तु दक्षिणी समुद्र के रोमांच[-]कारी पानी में मूल्यवान मोती और जड़ाव में प्रयोग किये जाने वाले मूं[गे] नहीं बनाते। यह मूंगे अफ्रीका और इटली के तटों पर पाये जाने वाले लाल और गुलाबी पोलाईपस से प्राप्त होती हैं[।]

प्र०: कीट पतंगों ने संसार में कब [से] उड़ान भरनी प्रारम्भ की थी ?

उ०: कीट पतंगों की उड़ान का रहस्य लगभग 350,000,000 वर्ष पुराना है[।] इस युग में पृथ्वी कीड़े मकोड़ों से भर[ी] पड़ी थी। परन्तु इनमें से किसी के पंख नहीं थे। केन्सास विश्वविद्यालय के प्राचीन विज्ञेता मैथ्यू डगलस के अनुसा[र] इन इन्सैक्सटस के पंखों जैसे ही छोटे छोटे फ्लैप थे जो इनके शरीर के निचले भाग से बाहर निकलते थे। डगलस का मत है कि उस समय इन फ्लैप्स का का[र्य] धूप से गर्मी ग्रहण कर सर्दी में शरी[र] का तापमान बढ़ाना रहा होगा।

कन्बोनिफोरस काल में एक नाट[की]कीय विकास उत्पन्न हुआ। एम्फीबियन्[स] और रेंगने वाले जानवरों जैसे जानव[र] पृथ्वी पर रेंगकर आने लगे। इनकी संख्[या] बहुत बड़ी थी—पृथ्वी पर आने का कारण समझा जाता है अपने मनचा[हे] भोजन-कीड़े मकोड़ों की तलाश।

अब इन्सैक्टस का अपने पहले [दो] शत्रुओं मकड़ियों और बिच्छुओं [के] तीसरा और अधिक भयंकर खतरा ब[न] गया। शुरू-शुरू में इन्सैक्टस ने अपन[ी] सुरक्षा लम्बी छलांग लगाकर की, ज[ब] वे अपने शरीर में लगे फ्लैप्स की सहायत[ा] से कर पाने में सफल हो पाये, धीरे-धी[रे] जीवित बच पाये इन्सैक्टस के पंखनु[मा] फ्लैप्स बड़े होते गए।

कुछ लोगों का मत है कि अपन[ी] जान बचाने के अन्तिम प्रयास में कु[छ] इन्सैक्टस ने अपनी छलांग को और ब[...]

शेष पृष्ठ ३१ पर

खेल खेल में

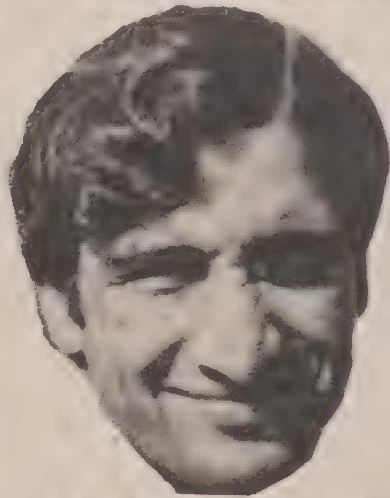
भारत पाक
दीवाना टैस्ट श्रृंखला

1982-83 में हाल में समाप्त हुए भारत पाक टैस्टों में एक बात साफ उभर कर आई कि दोनों देशों के क्रिकेट खिलाड़ियों के स्तर में बहुत बड़ा अन्तर है। टैस्ट मैच बिलकुल एकतरफा रहे। जब तक दोनों टीमों में लगभग बराबरी का मुकाबला न हो तो टैस्टों का मजा ही क्या रहा? अम्पायरिंग को दोष देने का कोई लाभ नहीं है। अगर भारत पाक की क्रिकेट टीमों के मुकाबलों के लिए नए विशेष नियम न बनाए जायें तो भविष्य के भारत पाक टैस्टों को देखने के लिए कुत्ता भी नहीं जायेगा। दीवाने नियम कुछ ऐसे होने चाहियें—



1. जहीर अब्बास या इस नाम का कोई खिलाड़ी अकेले पूरे भारतीय टीम द्वारा बनाए रनों से अधिक रन नहीं बनाएगा।
2. वह इस तरह आक्रामक बल्लेबाजी नहीं करेगा कि भारतीय बालरों का दिल टूट जाए।
3. गलत नम्बर के चश्मे पहन कर बैटिंग करेगा।

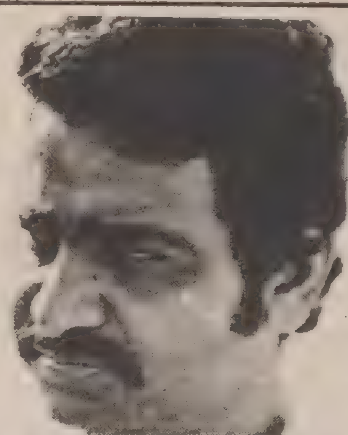
1. इमरान खान नामक खिलाड़ी एक इनिंग्ज में तीन से अधिक भारतीय विकेटें नहीं लेगा।
2. टैस्ट मैचों के दौरान रात भर लड़कियों के टेलीफोनों के जवाब देता रहेगा ताकि दूसरे दिन नींद की कमी के कारण ठीक से बॉलिंग न कर सके।
3. दस ओवरों में एक से अधिक बाऊंसर नहीं डालेगा।



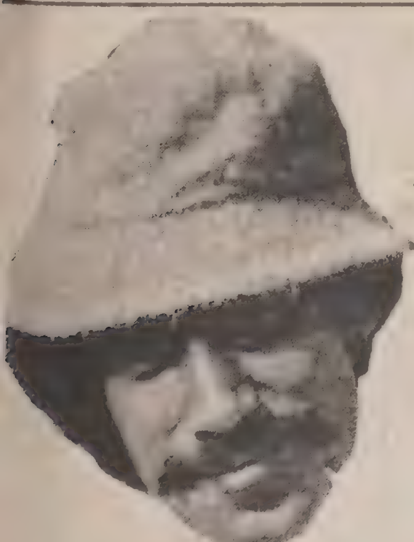
1. अब्दुल कादिर नामक खिलाड़ी गेंद फेंकते समय शरीर को झटके नहीं देगा, इससे भारतीय बल्लेबाज विचलित होते हैं।



1. जावेद नामक खिलाड़ी गेंद पर रन बनाने की कोशिश नहीं करेगा। एक ओवर में केवल एक स्कोरिंग स्ट्रोक मारेगा।
2. विकेटों के बीच तेजी से दौड़ कर रन नहीं बनायेगा—दिलीप दोषी से अधिक तेज दौड़ने की सख्त मनाही होगी।



1. भारतीय बल्लेबाज नकाब पहन कर बल्लेबाजी करने जायेंगे। ताकि दर्शकों को यह पता न लगे कि कौन आ रहा है और कौन आऊट होकर जा रहा है। इससे हमारे बल्लेबाजों का मनोबल बना रहेगा।



1. पिच पर एक दिन से ज्यादा नहीं टिका रहेगा—पहले दिन आऊट न हो तो उसके बाद बल्लेबाजी करने नहीं आने दिया जाएगा—

1. सरफराज नामक खिलाड़ी अपने इन स्विंगरों और आऊट स्विंगरों को मिलाकर नहीं फेंकेगा, इससे भारतीय बल्लेबाज धोखा खा जाते हैं। एक ओवर में या तो इनस्विंगर ही फेंक जायेगा या आऊट स्विंगर। ओवर शुरू करने से पहले भारतीय बल्लेबाज को बताएगा कि वह आऊट स्विंगर फेंकने जा रहे हैं या इनस्विंगर।



1. भारतीय कप्तान टास हार जाए तो वह जीता हुआ समझा जाए और खेलने व खिलाने का फैसला वही करे।



पृष्ठ १६ से आगे

मुमकिन है, यह किनारे के जलवायु का असर है कि बदलते हुए मौसम के गुंजान कारोबारी शहर में मछली और मेहमान पहले ही दिन बदबू देने लगते हैं। कभी-कभी उमस बढ़ जाती है, तो ऐसा मालूम होता है जैसे यह बंदरगाह एक लम्बी चौड़ी तुर्की हम्माम है, जिसमें सब कपड़े पहनकर गुसल कर रहे हैं। कपड़े हैं कि सूखने का नाम नहीं लेते। शायद इसीलिए धोबी दो-दो हफ्ते शक्ल नहीं दिखाते)। पसीना है कि किसी तरह खुश्क नहीं होता। जी चाहता है कि ब्लाटिंग पेपर का लिबास बनवा लें। सच तो यह है कि ऐसी आबोहवा में कपड़े मौसम से बचाव के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ कानून से बचने के लिए पहने जाते हैं।

शाम को अक्सर इतनी ओस पड़ती है कि आप ओक से पी सकते हैं। नायलान भीगकर प्याज की झिल्ली बन जाता है। गालों पर पेंसिल से बनी भौहों के रेले बहने लगते हैं। बीते शनिवार की ही बात है कि मैं टहलता हुआ क्लिफटन जा निकला, देखा कि समदर के किनारे एक मेज पर मिर्जा अब्दुलवद्द बेग बैठे चाय पी रहे हैं। चाय तो खैर वाजिबी सी थी, लेकिन पुडिंग बेहद मजेदार निकला। मैंने बैरे से ओंठ चाटते हुए फरमाइश की, 'एक सिंगल प्लेट पुडिंग और लाओ' तो उसने बड़े रंजीदा लहजे में जवाब दिया, 'इस रेस्तरां में पुडिंग नहीं बनता। लेकिन जब मैंने उसे अपनी प्लेट में पुडिंग के निशान दिखाये, तो दौड़ा-दौड़ा गया और प्लेट में चार बिस्कुट और एक चमचा ले आया।

उसी भीगी भीगी शाम का जिक्र है कि एक सजीला जवान, जो कराची में नया मेहमान मालूम होता था, सीना ताने सामने से गुजरा। उसकी मूंछें दो बजने में दस मिनट बता रही थीं। देर तक मेरी निगाहें उसकी सुनहरी टोपी के कलफदार तुर्रे पर जमी रहीं, जो मोर की घमंडी पूंछ की तरह फैला हुआ और नये करेन्सी नोट की तरह करारा था। दस मिनटबाद वह चक्कर लगाकर लौटा, तो देखता कि वह तुर्रा, जी हाँ, वही मगरूर तु उसके मुंह पर दोहाजू के सेहरे की तर लटक रहा है और मूंछें चार बजने बीस मिनट बजा रही है।

बरसात की बहारें तो आप देख चु हैं। अब जरा सर्दी का हाल सुनिये यहां सलीकादार औरतों को अपने ग कपड़े इस्तेमाल करने की खातिर लाहौ जाना पड़ता है। दिसंबर में यहां ए चादर की सर्दी पड़ती है। यह चा मच्छरों से बचने के लिए ओढ़ी जाती है। अलबत्ता जब अखबारों में लगातार ख आती हैं कि लाहौर में कड़ाके की ठ पड़ रही है, तो कराची के रहने वा अपने गर्म कपड़े निकालते हैं, चिलग कुटकते है और उन्हीं अखबारों से पं झलते है और छींक आते ही कंबल ओ लेते हैं। होता यह है कि अगर कोई भ भी उड़ा दे कि लाहौर में ओले पड़े तो कराची के जिंदा दिल लोग फौ सिर मुड़ा लेते हैं।

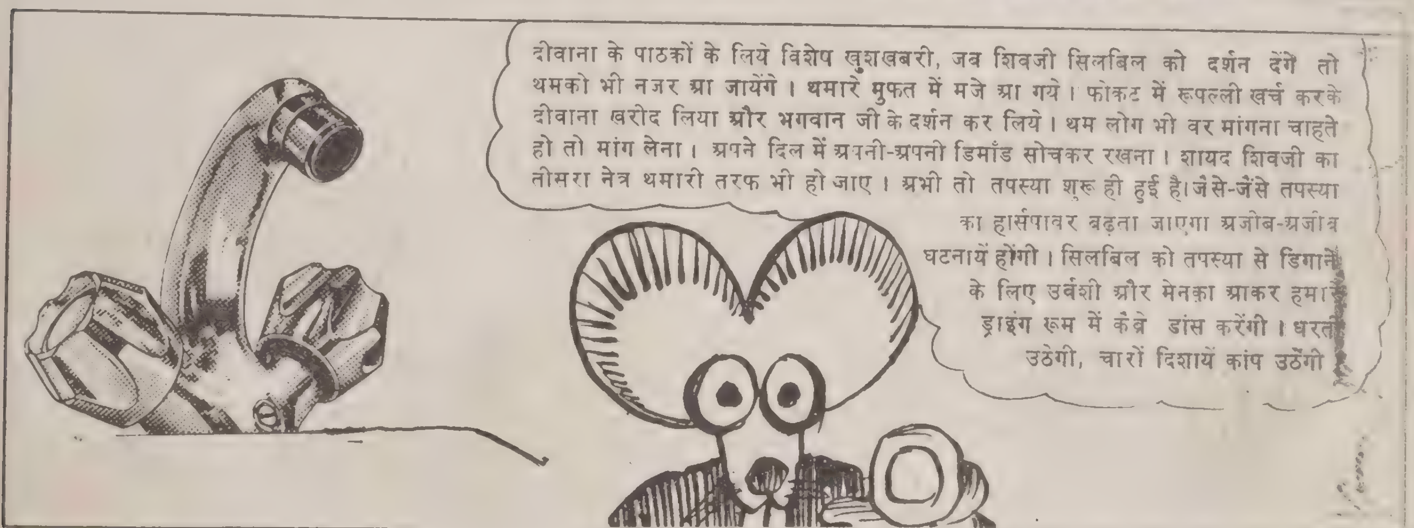
अनुवाद . तरन्नजीत


सिलबिल पिलपिल
घोर तपस्या
भारत कितनी बुरी तरह पाकिस्तान के विरुद्ध टैस्ट सीरीज हार गया। पहले हॉकी में सात गोलों से मार खा गया, अब तीन शून्य से क्रिकेट में पिटाई हो गई। हॉकी की हार के बखत तो थम दोनों ने बोत सोर मचाया था जैसे मिलन फिल्म में पवन ने सोर मचाया था लेकिन इबकी बारी दोनों चौधरी खामोश बैठे हो। क्या थमारे खेल प्रेम को जंग लग गया ?
ऐह
चूहे तू हमारे जख्मों पर नमक क्यों छिड़क रहा है, हम तो जानबूझ कर अनजान बन रहे थे।
हमारे दिल से खून की नदियां बह रही थीं। सिर धारीवाल के कम्बल के अन्दर छिपाकर रोते रहे। अनजान बनने का ड्रामा ऐसे ही था जैसे हम चाय में पड़ी मक्खी को नजर बचाकर फेंकते हैं और चाय पी जाते हैं।
लेकिन इतनी जल्दी हिम्मत हारने की क्या बात है। पाकिस्तान के विरुद्ध ही तो सीरीज हार गए हैं अभी तो वेस्टइंडीज के विरुद्ध टैस्ट सीरीज शुरु होना है, उसे बचाने के लिए काफी कुछ किया जा सकता है।
अब तो हमारे ऊपर और भी भारी जिम्मेदारी आ गई है। अभी-अभी समाचार आया है कि वेस्टइन्डीज के विरुद्ध भारतीय टीम की कप्तानी का भार थमारे हरयाणे के आल-राऊंडर कपिल देव के सिर पर बांधा गया है। यह हरयाणें के सारे जाटों के लिए गौरव की बात है। भारतीय टीम के खेल के साथ हरयाणे की इज्जत का सवाल जुड़ गया है। भारतीय टीम की जीत चौधरी चरणसिंह और देवीलाल की जीत है। जब भी बागड़ी भैंसों की इज्जत का सवाल उठा है, थम दोनों ने जान की बाजी लगाई है। देश ने जब भी थम दोनों को पुकारा है थमने तन मन धन और लाठी के साथ मैदान में कूद कर कमाल दिखाया है। अब एक बार फिर थमारे लिए ट्रंक काल आया है।
जब तक आप दोनों कुछ नहीं करोगे तब तक भारत की टीम नहीं जीत सकती।
लेकिन हम कर क्या सकते हैं ? सारे भारतीय खिलाड़ियों को दो-दो किलो देशी घी अपनी बागड़ी भैंसों का मुफ्त दे सकते हैं। उससे उनके शरीर में ताकत आएगी। बल्ले और गेंद का टकराव जादा हाई पावर से होगा, गेंद सीधे बाऊंड्री के पार जाकर ही रुकेगी। कपिल देव की गेंदें जादा तेजी से विकटें उखाड़ ले जाएंगी।
देशी घी से काम नहीं चलेगा और कुछ करना पड़ेगा।

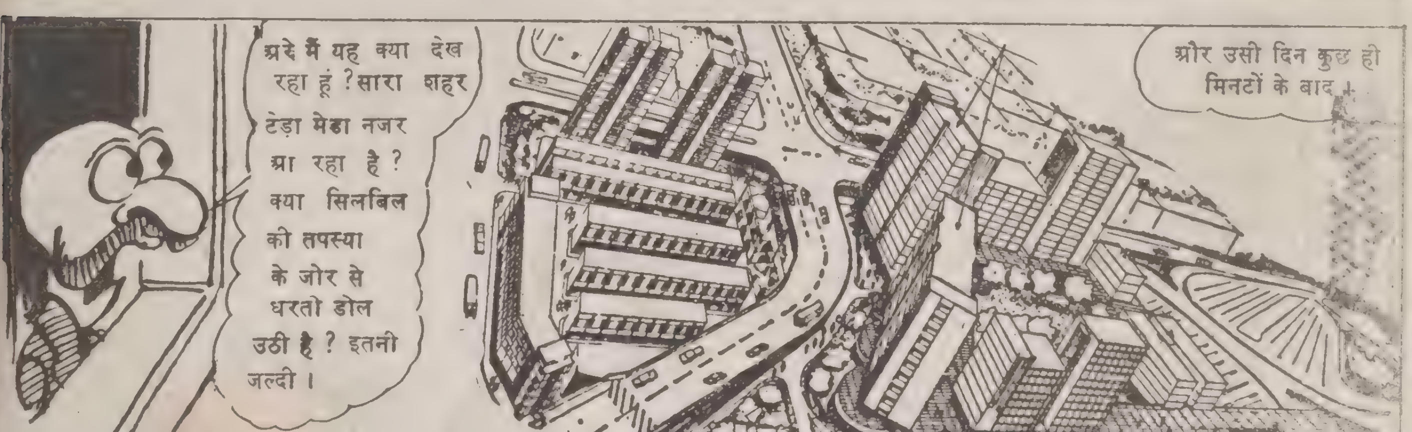

अच्छा ! कपिल देव को भारत की टीम का कप्तान बनाया गया है। अब तक हमें यह खबर क्यों नहीं दी गई ? क्यों हमसे इतना महत्वपूर्ण समाचार छिपा कर रखा गया ? इसके पीछे किसकी शरारत है ? मैं उसकी गर्दन मरोड़ कर रख दूंगा।
अब भारतीय टीम को हम हारने नहीं देंगे। ऐसी तरकीब लड़ायेंगे कि वेस्टइंडीज के सारे दिग्गज बल्लेबाज शून्य पर ही आऊट हो जायेंगे। विवियन रिचर्ड को हम आधे से ज्यादा रन नहीं बनाने देंगे। क्लाइव लायड के चश्मों का नम्बर बदल कर रख देंगे। होल्डिंग के हाथों को फोल्डिंग बनाकर रख देंगे बस जरा हमारे दिमाग में तरकीब आने भर की देर है।
चूहे के बच्चे अब तेरी खैर नहीं है।
तू दुश्मनों का जासूस है। पाकिस्तान के विरुद्ध हमारी टीम की हार के पीछे भी तेरा हाथ रहा होगा।
गद्दार तूने पंद्रह मिनट तक कपिल देव के कप्तान बनाये जाने की खबर हमसे छिपाकर क्यों रखी। जैसे ही तुझे समाचार मिला था तेरा फर्ज था कि हमें फौरन बता देता।
चौधरी साहब मेरे से ऐसी क्या गलती हो गई जो अचानक मुझ पर बरस रहे हो ?
अब तू अपनी खैर चाहता है तो हमें कोई ऐसी तरकीब बता जिससे हमारी टीम कपिल देव के नेतृत्व में वेस्ट इंडीज में पांचों टैस्ट जीत आये। पांचों बार कपिल देव टॉस जीते और हर मैच में भारत को कम से कम पारी से जीतना है। अगर तूने ऐसी तरकीब हमें नहीं बताई तो मेरे से बुरा कोई नहीं होगा। मैं तुझे फिरोज शाह कोटला के पिच में जिन्दा दफन कर दूंगा।
ठहरो मुझे सोचने का मौका तो दो।
भारत धर्म भूमि है, अतः मैंने तरकीब भी धार्मिक ही बताई है। हमारे धर्मग्रन्थों में लिखा है कि पुराने जमाने में ऋषि मुनि वनों में घोर तपस्या किया करते थे और उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान दर्शन देते थे और मनचाहा वर दिया करते थे। वही तरीका अब भी आजमाया जाएगा।
मिसबिल अपने बैडरूम में एक टांग पर खड़े होकर महामृत्युंजय तपस्या करेगा और शिवजी को दर्शन देने पर मजबूर करेगा।



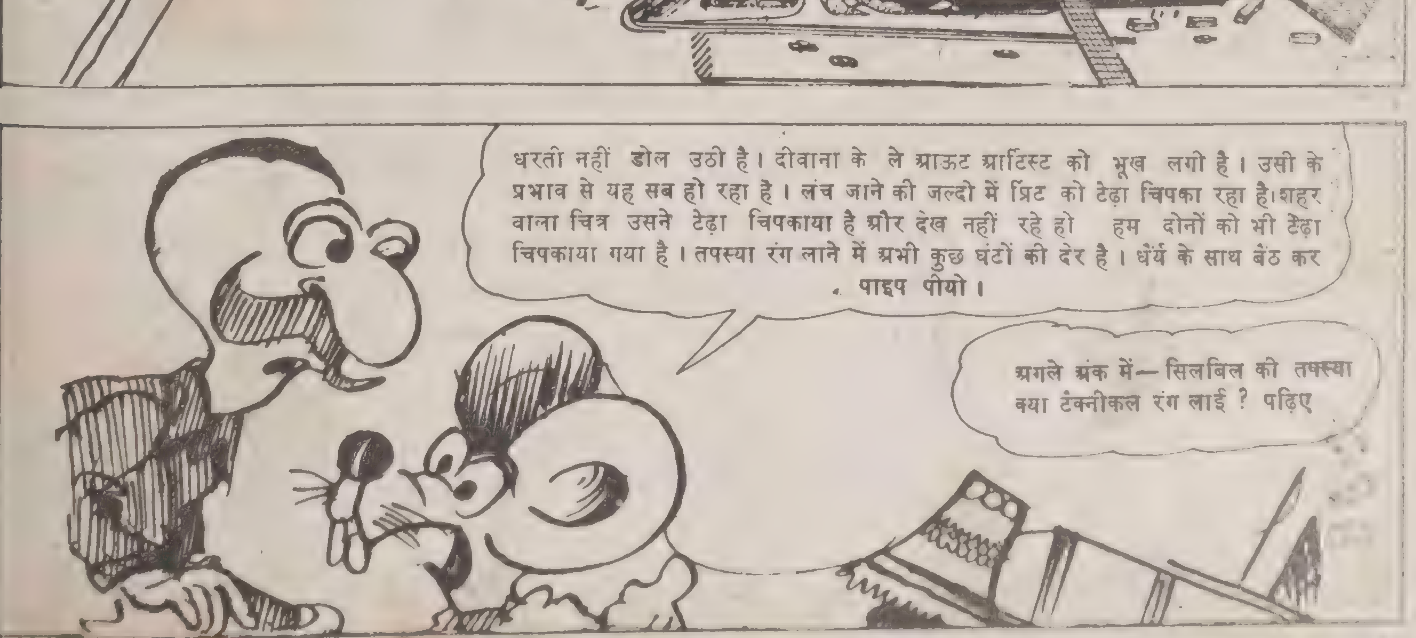
जब शिवजी दर्शन देंगे ग्रौर वर मांगने के लिए कहेंगे तो सिलबिल यही वर मांगेगा कि हमारी टीम कपिल देव के नेतृत्व में पांचों टैस्ट मैच जीत जाए।
डोंट डिस्टर्ब
घोर तपस्या इन प्रोग्रेस
यह पुराने जमाने की बात है ग्राजकल तो इन्सटेंट काफी का युग है। कुछ ही दिनों की बात है
कितनी देर तपस्या करनी पड़ेगी इसे? ऋषि-मुनि तो सैंकड़ों हजारों वर्ष तपस्या किया करते थे तब कहीं भगवान के दर्शन नसीब होते थे... इतना टायम कहां है हमारे ···पास।



दीवाना के पाठकों के लिये विशेष खुशखबरी, जब शिवजी सिलबिल को दर्शन देंगे तो थमको भी नजर ग्रा जायेंगे। थमारे मुफत में मजे ग्रा गये। फोकट में रूपल्ली खर्च करके दीवाना खरीद लिया ग्रौर भगवान जी के दर्शन कर लिये। थम लोग भी वर मांगना चाहते हो तो मांग लेना। ग्रपने दिल में ग्रपनी-ग्रपनी डिमांड सोचकर रखना। शायद शिवजी का तीसरा नेत्र थमारी तरफ भी हो जाए। ग्रभी तो तपस्या शुरू ही हुई है। जैसे-जैसे तपस्या का हार्सपावर बढ़ता जाएगा ग्रजीब-ग्रजीब घटनायें होंगी। सिलबिल को तपस्या से डिगाने के लिए उर्वशी ग्रौर मेनका ग्राकर हमारे ड्राइंग रूम में कैब्रे डांस करेंगी। धरती उठेगी, चारों दिशायें कांप उठेंगी।



ग्ररे मैं यह क्या देख रहा हूं? सारा शहर टेढ़ा मेढा नजर ग्रा रहा है? क्या सिलबिल की तपस्या के जोर से धरती डोल उठी है? इतनी जल्दी।
ग्रौर उसी दिन कुछ ही मिनटों के बाद।



धरती नहीं डोल उठी है। दीवाना के ले ग्राऊट ग्रार्टिस्ट को भूख लगी है। उसी के प्रभाव से यह सब हो रहा है। लंच जाने की जल्दी में प्रिंट को टेढ़ा चिपका रहा है। शहर वाला चित्र उसने टेढ़ा चिपकाया है ग्रौर देख नहीं रहे हो हम दोनों को भी टेढ़ा चिपकाया गया है। तपस्या रंग लाने में ग्रभी कुछ घंटों की देर है। धैर्य के साथ बैठ कर पाइप पीयो।
ग्रगले ग्रंक में— सिलबिल की तपस्या क्या टैक्नीकल रंग लाई? पढ़िए



सुनील बतरा, जीन्द : गरीब चन्द जी, आपकी पूंछ इतनी लम्बी कैसे हो गई ?

उ० : पाठक जो मुझे याद करते हैं। कोई याद करे तो लोगों की उम्र लम्बी होती है,मेरी पूंछ लम्बी होती है।

पंडित मेवालाल 'परदेशी', महोबा : आपको अच्छी बातें बुरी कब लगती हैं ?

उ० : जब मूड उखड़ा हुआ हो तब।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया, मण्डला गरीब चंद जी इन्सान धन दौलत से नफरत कब करता है ?

उ० : जब इन्कमटैक्स आफिसर के दफ्तर के चक्कर लगाने पड़ते हैं।

रश्मि त्यागी, नूरपुर : मेरे घर वाले मुझे बहुत परेशान करते है मैं क्या करूं ?

उ० : आपको अभी से परेशान होने की अच्छी आदत डाली जा रही है आगे चलकर महंगाई व जनसंख्या वृद्धि के कारण हर कोई परेशान नजर आएगा।

अशोक जौहर 'सांवरिया', देहरादून : यदि कोई शादी शुदा होते हुए भी किसी दूसरी लड़की के चक्कर में फंस जाए तो ?

उ० : बैडमिन्टन हो जाएगा। बीबी व प्रेमिका के बीच शटलकॉक बनकर रह जाएगा।



कृष्णा लाल दुआ, प्रेमनगर जीन्द : गरीब चन्द जी वह कौन सी बात है जो अपनी प्रेमिका को नहीं बतानी चाहिए ?

उ० : अपनी दूसरी प्रेमिका का जिक्र नहीं करना चाहिए।

विनोद थापर, हापुड़ : गरीब चन्द जी, अगर कोई पुराना दोस्त धोखा दे जिस पर पूरा विश्वास हो तो क्या करना चाहिए ?

उ० : आगे से फूंक-फूंक कर कदम रखने की सीख सीखनी चाहिए।

श्याम गगनानी, अकोला : गरीब चन्द जी, फिल्मों की जिंदगी और हकीकत की जिंदगी में क्या अन्तर है ?

उ० : जितना अंतर चाँद और मक्की की रोटी में है।

चंदर लालवानी, लाबकपुर, अहमदनगर: इन्सान की ख्वाईश क्या होती है ?

उ० : एक हो तो गिनें। सैंकड़ों ख्वाईशें हैं ऐसी कि हर ख्वाईश पे दम निकले।

प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरजी : दोस्त रूठता कब है ?

उ० : जब सीधी तरह उसकी बात नहीं मानी जाती तो वह रूठने का टेढ़ा रास्ता अपनाता है।

प्र० : लोग कहते हैं। किस्मत बड़ी होती है। कुछ कहते हैं कर्म बड़ा होता है। आपका क्या विचार है ?

उ० : जिनको अपने ऊपर विश्वास नहीं होता वही किस्मत की आड़ लेते हैं अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए।

जगदीश हबलानी 'अजीज', रायपुर : डियर गरीबचंद जी, क्या यह सच है कि आजकल के जमाने में इन्सान के साथ-उसकी इज्जत को भी पैसे से खरीदा जा सकता है। अगर यह झूठ है तो सच क्या है ?

उ० : जब इन्सान को खरीदा जा सकता है तो उसकी इज्जत तो साथ ही आएगी। जैसे कुछ खरीदने पर लिफाफा मुफ्त में आता है।

राजेन्द्र सिंह बेदी, सितार गंज : गरीब चन्द जी, क्लास में एक लड़की मेरे बिलकुल पास में बैठती है। जब मैं किसी काम से निपट कर दुबारा सीट पर बैठता हूं तो वो मौका पाकर कुर्सी खींच देती है और मैं गिर जाता हूं। अब आप ही बताएं मैं क्या करूं

उ० : अगली बार उसकी गोद में जा गिरिये।

प्र० : गरीबचन्द जी, मुझे दिन में तारे नजर आते हैं क्या करूं ?

उ० : थप्पड़ खाने के बाद या पहले ?

सोमनाथ करकेरा, बम्बई : आजकल मेरी प्रेमिका मुझसे मिलने से इनकार करती है। मैं उसे कैसे मनाऊं ?

उ० : रोज सुबह दोपहर व शाम को पत्र लिखकर डालना शुरू करें। आखिर चिट्ठियों से तंग आकर वह मिलेगी।

मुन्ना लाल गुप्ता, (जोरथांग) सिक्किम प्रिय गरीब चन्द जी, क्या आप चूहा हैं? (जो चूहा डाक पढ़ता हुआ चित्र में छपा है ?) अगर हैं तो दीवाना पत्रिका में प्रकाशित कीजिएगा।

उ० : जी हां डाक पढ़ता हुआ,वह अपने राम ही हैं।

ओम प्रकाश भाटिया, (पहाड़ी धीरज) प्रिय गरीब चन्द जी, क्या आप न पाठकों के उत्तर नहीं देते ?

उ० : हम नए या पुराने पाठकों में भेद नहीं करते। हमारी कलम एक डंडा है जिससे हम बकरी, घोड़े, गाय, बैल सबको बिना भेदभाव के हांकते हैं। हां, प्रश्न न प्रकार का हो तो उत्तर देने का मजा कुछ और आता है।

सुधीर संद, राया (मथुरा) : गरीब चन्द जी, मैं आपसे मिलना चाहता हू क्योंकि मैं आपसे बिल खोदना सीखूंगा, कृपया घंटा मिनट कार्यालय बतायें।

उ० : हमारी युनिवर्सिटी का बिल खोदने का कोर्स उन्हीं विद्यार्थियों के लिए खुला है जिनका वजन एक किलो से ज्यादा न हो।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर (नैनीताल) कौन लोग खुद को अकलमन्द और दूसरों को मूर्ख समझते हैं ?

उ. : यह गुण महामूर्खों में होता है।

गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली : गरीब चन्द जी, प्यार करने वालों को ये दुनिया जीने क्यों नही देती ?

उ० । क्योंकि वे वैसे भी एक दूसरे पर मर रहे हैं।



फैण्टम- गुमनाम कमाण्डर
मिस्टर ! इसे बुला लो ।
इसे कूड़ा कहलाना और लात खाना ना पसन्द है ।
मुझे माफ करो, इसे बुलालो ।
यह बात हुई । कृपया एक गिलास दूध और मेरे मित्र के लिए थोड़ा पानी ।
क्या ?
सीधी फरमाईश है । मेरे लिए दूध और मेरे मित्र के लिए पानी ।
इसे दूध चाहिए । हा हा हो हो हो ।
उसने तुम्हारी नाक काट दी, मोटे भैंसे ।
हां ।
बदनाम ब्लूड्रैगन सैलून में ।
भौं···
सड़ाक—
!!
!
मैं सिर्फ दूध के ग्लास के लिये आया था—
!
!
—और अपने दोस्त के लिये पानी ।
अब मुझे मिलेगा !
हां, श्रीमान् ।



मिस्टर तुम कमाल के हो।
मेरी तरफ से एक ड्रिंक लो।
एक मेरी तरफ से भी।
नहीं, धन्यवाद। मैं दूध ही लूंगा —पर शायद आप मेरी मदद कर सको—
मैं एक ललौंगो के नौजवान ललोनी को ढूंढ़ रहा हूं। आप में से किसी ने सुना है?
कभी सुना है?
!
अरे! क्या आप और दूध लेंगे श्रीमान?
ललौंगो का आदमी ललोनी?
नहीं कभी भी नहीं सुना।
नहीं— धन्यवाद
तुम में से कोई ललौंगो के एक ललोनो नाम के नौजवान को जानता है?
नहीं—नहीं।
मिस्टर तुम घूंसा ठोस मारते हो।
कुछ पीजिये।
अरे नहीं।
मेरे ख्याल से मैंने उसके बारे में सुना है, गुरु को बोलो, कोई यहां पूछताछ कर रहा है।
मैंने तुम्हें बताया नहीं था जंगल की राहों में माल ही माल है। देखो मोती, हीरे! कमाल के!
वाह।
स्थाननीय बाजार के लिये बहुत बढिया है, यह माल यूरोप जायेगा।
ब्लूड्रैगन में एक बड़ा सा आदमी ललोनी को पूछ रहा है।
?
कश लो—और सपने देखो
यह क्या चीज है?
जैसा लेडी कहती है वैसा ही करो ललोनी
कश लो, सपने देखो···
सुन्दर सपने, जंगल बॉय।

मूवी मसाला



संजयदत्त का गोली चलाते फिरना

फिल्मों के तरीके भी अजीब है संजय की गोली चलाने की वारदात के बाद, डर था कि उसका फिल्मी कैरियर कहीं खटाई में न पड़ जाये, क्योंकि उसके अन्य तरीके भी बेतुके हैं, मसलन शराब पीने की आदत, नशे की आदत और मानसिक तनाव। इसके विपरीत उसकी 'मायो इमेज' बन गई और प्रोड्यूसर उसे अनुबंध करने के लिये उसके घर के बाहर लाइन लगा रहे हैं। शूटिंग की घटना के बाद उसे 10 नई फिल्मों में काम मिल गया है। यहाँ तक की बी. आर. चोपड़ा ने भी उसे अपनी एक फिल्म में साइन कर लिया है।

अमिताभ की राजनीति में आने की संभावना

कांग्रेस (आई) के नेताओं से संपर्क में आने वालों के अनुसार अमिताभ के सक्रिय राजनीति में प्रवेश की सम्भावना है।

एशियाई खेलों के आरम्भिक समारोह पर जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में अमिताभ को विशेष स्थान दिया गया था, सूत्रों के अनुसार यह उन्हें सक्रिय राजनीति में लाने की शुरुआत थी।

उत्तरी भारत के राजनीतिज्ञ, दक्षिण भारत में फिल्म स्टार्स के राजनीति में आने से परेशान से हो रहे हैं। तमिल की चीफ मिनिस्टर शिप फिल्म स्टार रामचन्द्रन को मिल गई है और आन्ध्रा में रामाराव का बोलबाला है। और भी बहुत से फिल्म स्टार राजनीतिक स्टेज पर दृष्टि गोचर हो रहे हैं। उन्होंने रामचन्द्रन और रामाराव को पूरा समर्थन दिया है।

अमिताभ ने अपनी शूटिंग्स के साथ-साथ कुछ राजनीतिक समारोहों में भाग लेने की सहमति दे दी है। सुनीलदत्त, मनोज कुमार, दिलीप कुमार की भी कांग्रेस (आई) का चुनाव में समर्थन करने की आशा है। तो फिर अमिताभ भी क्यों न दें?'

परन्तु क्या उसके हथियार वापिस मिल गये हैं? कुछ दिन पहले वह एक्टर मित्र 'बैनी' के घर गया और उसकी ओर रिवाल्वर तान कर खड़ा हो गया। 'बैनी' अपनी जान लेकर भागा जब तक कि संजय ने उससे यह नहीं कहा कि वह मजाक कर रहा था। एक दो और ऐसे मजाक संजय ने किये तो बैनी को संजय का पीछा छोड़ देना पड़ेगा।

डरे हुए

हालांकि शूटिंग घटना के बाद संजय दत्त का बाजार में उसकी मायो इमेज के कारण भाव बढ़ गया है पर दो व्यक्ति ऐसे हैं जो एक जैसे ही सोचते हैं संजय के विषय में—संजय का डर! वे हैं राजेश खन्ना और धर्मेन्द्र।

राजेश खन्ना ने अपने बंगले आशीर्वाद में पहरा बढ़ा दिया है क्योंकि उन्हें डर है कहीं संजय दत्त घर में घुस उसे और टीना को बन्दूक से डराने का प्रयास न कर पाये और धर्मेन्द्र उसने हेमा को संजय से दूर ही रहने को कह दिया है बेचारी हेमा को अपनी फिल्म 'सहारा' से संजय को निकालना पड़ा, जिसकी जगह अब मिथुन रोल अदा करेंगे।

डरे हुए सितारे सुरक्षा के लिये बन्दूकों का सहारा—हालीवुड में सितारे बन्दूक या अंगरक्षक के साथ ही बाहर निकलते हैं।

क्योंकि फिल्मी सितारों को मारधाड़ का डर बना रहने लगा है। मौत की धमकियों ने बहुत से सितारों को अकेले रहने पर मजबूर कर दिया है।

पिछले माह सिंगर डीन मारटिन ने सितारों की दुखद जीवन स्थिति के विषय में बताया जब अपनी सुरक्षा के लिए भरी बन्दूक लेकर विचरने पर उन्हें कोर्ट में जुर्माना देना पड़ा। उसने बताया कि बन्दूक उसे मजबूरी में अपने साथ रखनी पड़ी क्योंकि कई बार उसे जीवन समाप्त कर देने की धमकी मिल चुकी है।

एक और व्यक्ति है जो इन सुपर स्टारों के दुखद जीवन के विषय में खुले तौर पर जानते हैं वे हैं सीकरेट एजेन्ट डो कालिन्स, जिन्होंने रोबर्ट रेड फोर्ड और बारबरा स्ट्राईसन को कई बार सिर फिरों से बचाया है।

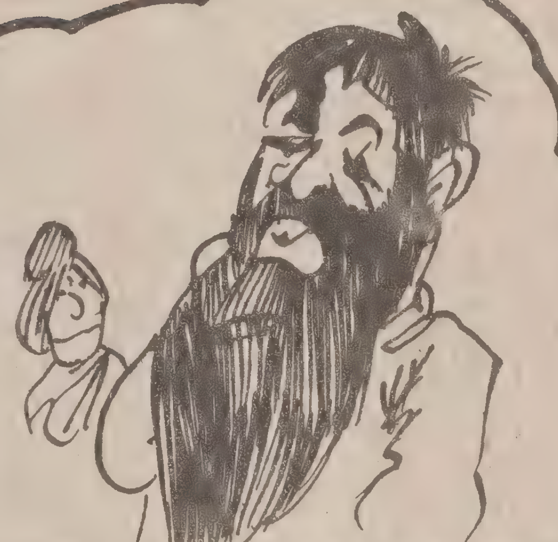


बड़ी दाढ़ी के लाभ हजार

दाढ़ी के अजीबो-गरीब लाभों पर नजर



दाढ़ी घनी और लम्बी है तो सर्दियों में मफलर का काम भी दे सकती है ।



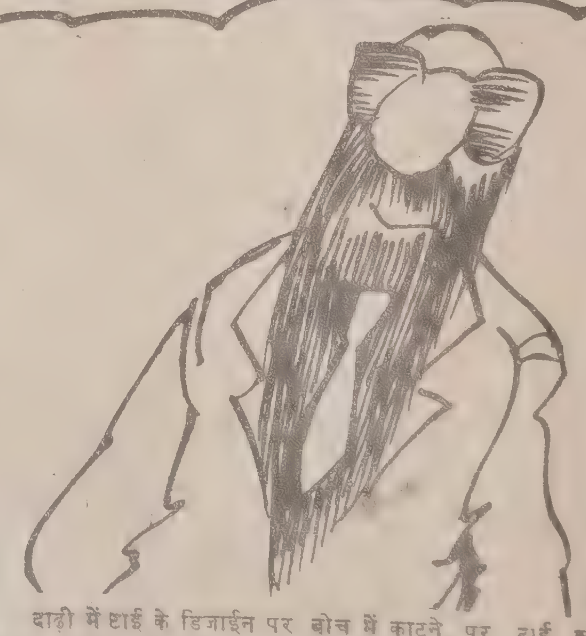
ऐन मौकों पर दाढ़ी पर्दे का काम भी दे सकती है । बीबी को आते देख इन महाशय ने दाढ़ी के पीछे रम का गिलास छिपा दिया है ।



दाढ़ी और चोटी में गांठ बांध वैवाहिक जीवन की शुरुआत की जा सकती है ।



दाढ़ी के कुछ बाल लम्बे हों तो इकतारे का काम दे सकती है । क्या कहे यह टुन-टुन ""उसके बाद""



दाढ़ी में टाई के डिजाईन पर बीच में काटने पर टाई का खर्च बचाया जा सकता है ।

पृष्ठ [illegible] से आगे

पाने की आशा में फ्लैप्स को हिलाना आरम्भ किया। धीरे-धीरे फ्लैप्स ने पंखों या परों का रूप ले लिया, जो किसी-किसी केस में दो फुट और ढाई फुट तक फैले हुए थे। इन्सैक्टस अपने शरीर के बिचले भाग की मजबूत मांसपेशियों की सहायता से इन परों को हिलाने लगे। अब यह आदिकाल के भयंकर जीवों से अपनी रक्षा उड़कर कर सकते थे।

अधिकतर इन इन्सैक्टस के दो जोड़े पर होते थे जो साथ-साथ कार्य करते थे, एक जोड़ा पर ऊपर को हिलता था, तो दूसरा नीचे की ओर हिलता था। ड्रैगन फ्लाईस जो अभी तक विकास क्रम में बिलकुल बिना बदले जीवित है इस दो जोड़े पंखों के सिस्टम का अच्छा उदाहरण है। परन्तु बहुत से विकसित इन्सैक्टस ने अपने परों को दो बड़े-बड़े पंखों में इकट्ठा कर लिया है, कुछ तो पंखों को अस्थायी तौर पर इकट्ठा कर लेते हैं जैसे मधुमक्खी और कुछ अपने पिछले पंखों को सिकोड़ लेती हैं और अपने बड़े परों से उड़ने का काम लेती है जैसे मक्खी।

आज की दो परों की इन्सैक्टस पुरानी चार परों वालियों से किसी प्रकार भी कम नहीं हैं। कुछ इन्सैक्टस जैसे मजदूर चींटी जो अपना बिल छोड़ कर कहीं नहीं जाती, ने अपने पंख गिरा दिये हैं। क्योंकि अब उन्हें इनकी कोई जरूरत नहीं है। चीटियों और ड्रैगन-फ्लाई में बहुत बड़ा अन्तर है। ड्रैगन-फ्लाई के पंख साढ़े चार इंच फैले होते हैं। पर ड्रैगनफ्लाई भी एटलस मौथ के सामने बहुत छोटी दिखाई देती है, क्योंकि एटलस मौथ के पंखों का फैलाव पूरे बारह इंच का होता है।

ताएक्वोन्डो

अब आपको ताएक्वोन्डो के पाठ के कुछ और भाग जो जिमि जगतियानी द्वारा विशेष तौर से हमारे पाठकों के लिये लिखे गये हैं। जिमि जगतियानी के देश भर में कई ताएक्वोन्डो के स्कूल हैं और इन्हें मास्टर चेम्पियन ब्रूसली से भी अपने इस आर्ट को सीखने का सौभग्य प्राप्त है।

जे. चौंए—गुल—सियोगी

पायोसोन केवी चिरुगी

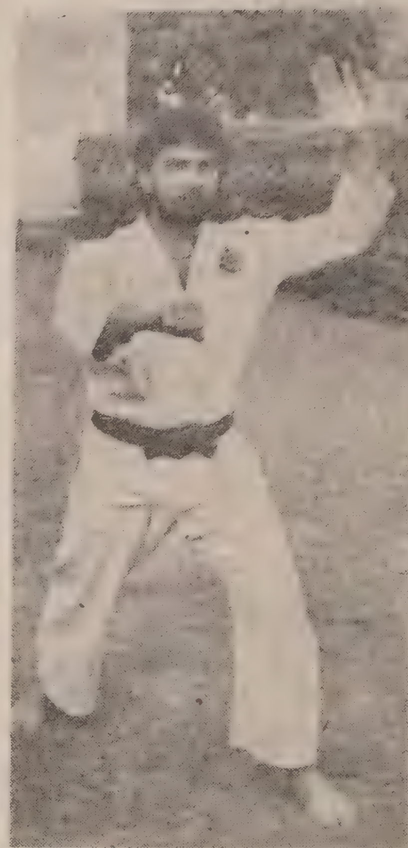
(धकेलने की मुद्रा उँगलियों के अगले भाग से प्रहार करना)

(1) चौंग—बी-स्यिोगी मुद्रा में खड़े हो बायीं टांग को दायीं टाँग की ओर बढ़ाओ बायें हाथ को कमर पर रखो। बांयी टांग को आगे बढ़ा दायें हाथ की तीन उंगलियों के अगले भाग से प्रहार करने के लिए आगे बढ़ाओ।

(2) चारों उँगलियों को मजबूती से सीधा रखना चाहिये।बेहतर होगा यदि तीनों ऊँगलियों के अगले भागों को एक बराबर कर लिया जाये (कनकी उंगली के सिवाय)।







1-3



1-2



1-4

निःशुल्क प्रवेश

दीवाना कॅमल रंग प्रतियोगिता

पुरस्कार जीतिए

कॅमल

पहला इनाम (१) रु. ३०/-

दूसरा इनाम (३) रु. २०/-

तीसरा इनाम (१०) रु. १०/-

१० प्रमाणपत्र

दीवाना

५ आश्वासन इनाम



इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह ज़ाफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

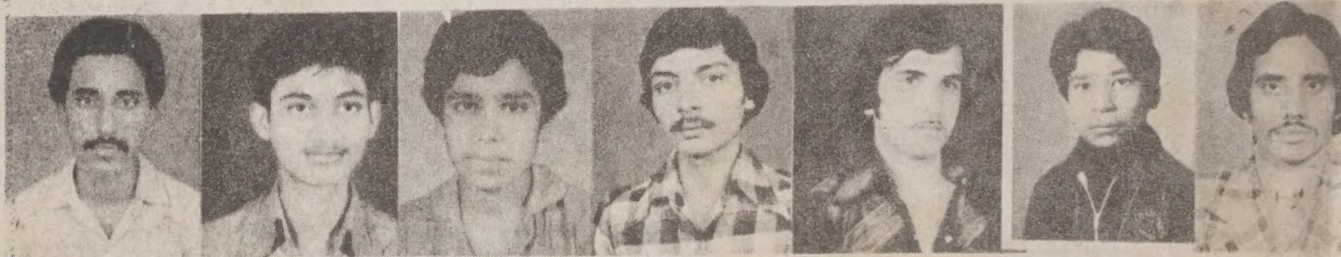
नाम.. उम्र........................

पता..

....

प्रवेशिकाएं 18-3-73 से पहले भेजी जायें.

CONTEST N(



राजेन्द्र कुमार शाह, सेन्ट्रल बिल्डिंग, नं.2 बम्बई 400002, 21 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

संजय श्रीवास्तव बोर्ड, शास्त्री नगर, जयपुर, (राजस्थान) 16 वर्ष, मित्रता करना।

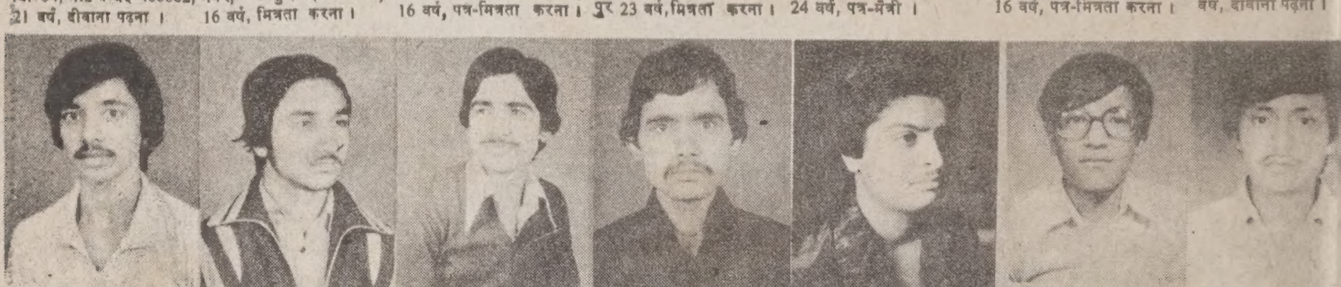
मुकेश गगवाल, रूपनगर रोड, तेजाजी का चौराहा, मदनगंज, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

आदित्य श्रीवास्तव, द्वारा श्री त्रिवेणीलाल, शारदा चौक राय-पुर 23 वर्ष, मित्रता करना।

श्याम गागवानी, श्याम क्लाथ स्टोर, मुर्तिजापुर, अकोला, 24 वर्ष, पत्र-मैत्री।

राकेश मानधर, 15/59, पकना जोल, काठमांडो, नेपाल, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

ब्रह्मानन्द सरोया, RZ- नागल राय, नई दिल्ली- वर्ष, दीवाना पढ़ना।



सुभाष मित्तल, राम निवास एन्ड को., बाघा पुराना (पंजाब) 20 वर्ष, दीवाना पढ़ना,।

टोनी गुप्ता, बांधा पुराना (पंजाब), 26 वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिएट कार चलाना।

जोगिन्द्र पाल खुराना, म. नं. 196 ए., नई मण्डी सिरसा, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

उदय भान, बी. 7/30 कृष्णा नगर, दिल्ली-51, 20 वर्ष, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना।

पवन कुकरेजा, भारतीय ट्रेवल्स 74/एफ रोड, रतलाम, 19 वर्ष, पढ़ना, खेलना, आदि।

सागर रत्न शाक्य, बाग बाजार, काठमांडो, (नेपाल), 19 वर्ष, पत्र-मित्रता करना आदि।

दिलीप माथुर, 97- लखनऊ-226004, 2 दीवाना पढ़ना आदि



मुकेश कु. जैन, 'पारस' 19 अब्दुल फजल रोड, दिल्ली-1 22 वर्ष, अभिनय करना।

राजकुमार के. सी., कमल पोखरी-काठमांडो. 15 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

कामेश कुमार राजपूत, गंगा सागर, जबलपुर, 20 वर्ष, पढ़ना और लिखना।

प्रदीप कुमार ग्लैमर, 46 शहीद रोड गया, (बिहार), 22 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

सतीश गुप्ता, रेलवे बाजार, कालावाली, (हरियाणा), 19 वर्ष, फरमाईश भेजना।

पवन सावलानी, 11/5 नार्थ राज मौहल्ला, इन्दौर म. प्र., 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

एस. के. रंजीत, नय (काठमांडो), 18 व पढ़ना आदि।



अरविन्द केवलानी टी. 36 ?रिन लाईन, ... 19 वर्ष, संगीत लेखन।

ब्रजेश कुमार गर्ग, पंकज मंडी माधव नगर, बुलन्दशहर, 24 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।

सुधीशना बाजपेयी, सी. 43, सेक्टर जे., अलीगंज, लखनऊ, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

राजू मिगलानी, 369 संत कालोनी, बहादुरगढ़, हरियाणा 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

प्रभु कुमार थालरा, म. नं. 55 नरायन नगर, पंजाबी कालोनी मैनपुरी 22 वर्ष, क्रिकेट खेलना

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ————————

पता ————————

आयु ———— शौक ————

नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

GET THEM RIGHT AWAY FIGHTING-T-SHIRTS FROM SUN

They're here now, a great new line in T-Shirts from SUN, the magazine that has always given you action. This is our Martial Arts T-Shirts series and each design is a breath-taking, super-charged affair.
You can order these mind-stopping T-Shirts by post or collect them personally from the SUN office in New Delhi. Each T-Shirt is Rs. 25/- only and those who would like them by mail should add Rs. 5/- for postage (i.e. send us Rs. 30/-).
We have following combinations to offer in 34'' and 36'' size, round neck

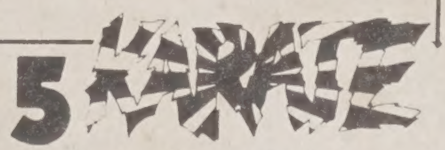








Design	Description	Code
1 DRAGON	Black on Red Black on Yellow	D/BR D/BY
2 KUNG FU	Red on Yellow Black on Yellow Black on Blue Black on Red	KFU/RY KFU/BY KFU/BB KFU/BR
3 TIGER CLAWS	Red on Yellow Black on Red Black on Blue Black on Yellow	TC/RY TC/BR TC/BB TC/BY
4 SIDE KICK	Black on Red Black on Yellow	KAR/BR KAR/BY
5 KARATE	White on Dark Blue	K/WB



Write with your remittance to:

SUN MAIL ORDER DEPARTMENT
8-B BAHADURSHAH ZAFAR MARG NEW DELHI 110002.

NO VPP PLEASE!

Postal Orders/Demand Drafts to be drawn in favour of SUN PUBLICATIONS, and mailed to ove address. Please indicate code number of the T-Shirt and the size you want when you order.

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82